सूरतुल मोमिनून-२३

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ

सूर: मोमीनून मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ अ ठारह आयतें तथा छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह दयालु एवं कृपालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١

(१) नि:संदेह ईमानवालों ने सफलता प्राप्त कर लिया।[1]

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝٢

(२) जो अपनी नमाज़ में विनम्रता करते हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣

(३) जो बेकार बातों से मुँह मोड़ लेते हैं।[3]

---

[1] فلاح का शाब्दिक अर्थ है चीरना, काटना, कृषक (किसान) को भी فلاح कहा जाता है कि वह धरती को चीर-फाड़कर उसमें बीज बोता है। مُفلِحٌ (सफल) भी वह होता है जो दुखों को काटता हुआ लक्ष्य तक पहुँच जाता है, अथवा सफलता का मार्ग उसके लिए खुल जाता है, उस पर बन्द नहीं होता। धर्म की दृष्टि से सफल वह है, जो दुनिया में रहकर अपने प्रभु को प्रसन्न कर ले तथा उसके बदले में आख़िरत में अल्लाह की दया तथा कृपा का अधिकारी बन जाये। इसके साथ दुनिया की सुख-सुविधा भी उपलब्ध हो जाये तो अल्लाह की महिमा है वरन् मूल सफलता तो आख़िरत की ही सफलता है चाहे दुनिया वाले इसके विपरीत साँसारिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्नता को ही सफलता समझते हैं। आयत में उन ईमानवालों को सफलता की शुभसूचना दी गयी है जिनमें लिखित गुण होंगे। जैसे अगली आयत देखिये।

[2] خشوعٌ से तात्पर्य हृदय तथा अंगों की एकाग्रता तथा लीनता है। हार्दिक एकाग्रता यह है कि नमाज़ की स्थिति में जानबूझकर विचारों तथा शंकाओं से हृदय को सुरक्षित रखे तथा अल्लाह की महिमा तथा महानता का चित्र अपने हृदय में बिठाने का प्रयत्न करे। अंग तथा तन की एकाग्रता यह है कि इधर-उधर न देखे, खेल-कूद न करे, बालों-वस्त्रों को संवारने में न लगा रहे। बल्कि भय, विनम्रता, तथा चिन्तन की ऐसी अवस्था हो, जैसी साधारणतया राजा अथवा किसी बड़े आदमी के समक्ष होती है।

[3] لغـو प्रत्येक वह कार्य तथा प्रत्येक वह बात है जिसका कोई लाभ न हो अथवा उसमें सांसारिक अथवा धार्मिक हानियाँ हों। इनसे बचने का अर्थ है कि उनकी ओर ध्यान भी न दिया जाये न कि उन्हें अपनायें अथवा उनको किया जाये।

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿٤﴾

(४) जो जकात (धर्मदान) अदा करने वाले हैं ।[1]

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٥﴾

(५) जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं ।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾

(६) सिवाय अपनी पत्नियों तथा स्वामित्व की दासियों के, नि:संदेह यह निन्दा किये जाने वालों में से नहीं हैं ।

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٧﴾

(७) इसके अतिरिक्त जो अन्य ढूँढें वही सीमा उलंघन कर जाने वाले हैं ।[2]

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٨﴾

(८) जो अपनी धरोहर तथा वचन की रक्षा करने वाले हैं ।[3]

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾

(९) जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं ।[4]

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾

(१०) यही उत्तराधिकारी हैं ।

---

[1]इससे तात्पर्य कुछ के निकट अनिवार्य जकात है (जिसका विवरण अर्थात उसकी मात्रा तथा ज़कात की दर यद्यपि मदीने में बतायी गयी फिर भी) इसका आदेश मक्के में ही दे दिया गया था तथा कुछ के निकट ऐसे कर्मों को अपनाना है जिससे मन की शुद्धि तथा व्यवहार एवं चरित्र की स्वच्छता हो ।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि متعة (मुतआ) की इस्लाम में कदापि आज्ञा नहीं है । तथा कामवासना की तृप्ति के लिए केवल दो ही उचित विधि हैं । पत्नी से सहवास करके अथवा दासियों से कामवासना की तृप्ति करके, बल्कि अब केवल पत्नी इस कार्य के लिए रह गयी है क्योंकि परिभाषित दासी का अस्तित्व अभी समाप्त है, यद्यिप जब कभी भी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई तो पत्नी ही की तरह उससे सहवास मान्य होगा ।

[3] أمانات से तात्पर्य निर्धारित डियुटी को पूरा करना, गुप्त बातों तथा माल की सुरक्षा है तथा वचनों के पालन में अल्लाह से किये हुए वचन तथा मनुष्यों से किये वचन एवं सन्धि दोनों सम्मिलित हैं ।

[4]अन्त में पुन: नमाज़ों की सुरक्षा को सफलता के लिए आवश्यक कहा है, जिससे नमाज की विशेषता तथा महत्व स्पष्ट होती है । परन्तु आज मुसलमान के निकट अन्य पुण्य कर्मों की तरह इसका कोई महत्व विशेष नहीं रह गया है ।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ۭ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ⑪

(११) जो फ़िरदौस (स्वर्ग की सर्वोच्च श्रेणी) के उत्तराधिकारी होंगे, जहाँ वे सदैव रहेंगे ।[1]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ⑫

(१२) तथा निःसंदेह हमने मनुष्य को खनखनाती मिट्टी के सार से उत्पन्न किया ।[2]

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ⑬

(१३) फिर उसे वीर्य बनाकर सुरक्षित स्थान में रख दिया ।[3]

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۤ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۭ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ

(१४) फिर वीर्य को हमने जमा हुआ रक्त बना दिया, फिर उस रक्त के लोथड़े को माँस का टुकड़ा बना दिया। फिर माँस के टुकड़े में अस्थियाँ बनायीं, फिर अस्थियों को माँस पहना दिया ।[4] फिर एक अन्य रूप में उसे

---

[1]इन वर्णित गुणों से युक्त ईमानवाले ही सफल होंगे जो स्वर्ग के उत्तराधिकारी अर्थात अधिकारी होंगे । स्वर्ग भी "जन्नतुल फ़िरदौस", जो स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान है जहाँ से स्वर्ग की नदियाँ निकलती हैं (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद बाबु दरजातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाहे व किताबुत तौहीद बाब वकान अर्शुहू अलल माअे)

[2]मिट्टी से पैदा करने का अर्थ आदि पुरूष आदम की मिट्टी से उत्पत्ति है अथवा मनुष्य जो भोजन भी खाता है वह सब मिट्टी ही से पैदा होता है, इस आधार पर उस वीर्य का मूलतत्व जो मनुष्य की उत्पत्ति का कारण बनता है, मिट्टी ही है ।

[3]सुरक्षित स्थान से तात्पर्य माता का गर्भाशय है, जहाँ नौ महीने बच्चा बड़ा सुरक्षित रहता तथा पलता है ।

[4]इसका कुछ विवरण सूरः हज में गुज़र चुका है । यहाँ उसे पुनः वर्णन किया गया है । फिर भी वहाँ مُخَلَّقَةٍ का जो वर्णन था, यहाँ उसकी व्याख्या مُضْغَةً को अस्थियों में परिवर्तित करने तथा अस्थियों को माँस पहनाने से कर दी है । مُضْغَةً माँस को अस्थियों में परिवर्तित करने से उद्देश्य मानव के ढाँचे को सुदृढ़ आधार पर खड़ा करना है । क्योंकि मात्र माँस में कोई दृढ़ता तथा कठोरता नहीं होती । परन्तु यदि उसे मात्र अस्थियों का ढाँचा ही बनाया जाता तो मनुष्य में वह सुन्दरता एवं आकर्षण न होता जो प्रत्येक मानव के अन्दर विद्यमान है । इसलिए उन अस्थियों में एक विशेष अनुपात तथा मात्रा में माँस चढ़ा दिया गया है कहीं पर अधिक तथा कहीं पर कम, ताकि उसके आकार प्रकार में असंतुलन एवं भद्दापन न उत्पन्न हो । बल्कि वह सुन्दरता तथा आकर्षण का नमूना तथा

أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٤﴾

उत्पन्न कर दिया ।[1] मंगलमय है वह अल्लाह जो सबसे अच्छी उत्पत्ति करने वाला है ।[2]

ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾

(१५) इसके पश्चात फिर तुम सब अवश्य मर जाने वाले हो ।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

(१६) फिर क़ियामत के दिन निःसंदेह तुम सब उठाये जाओगे ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा हमने तुम्हारे ऊपर सात आकाश बना दिये हैं,[3] तथा हम सृष्टि से अचेत नहीं हैं ।[4]

सृष्टि का उत्कृष्ट नमूना हो । इसी बात को क़ुरआन में अन्य स्थान पर इस प्रकार से वर्णन किया गया है ।

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ﴾

"हमने मनुष्य को सुन्दर रूप अर्थात अत्यधिक अच्छे योग अथवा बहुत अच्छे ढाँचे में बनाया ।" (सूरः *अत्तीन-४*)

[1]इससे तात्पर्य वह शिशु है जो नौ महीने के पश्चात एक विशेष रूप लेकर माता के गर्भ से जन्म लेता है तथा चलने-फिरने की शक्ति के साथ सुनने तथा देखने एवं बोध की शक्तियाँ भी उसके साथ होती हैं ।

[2] خالقين यहाँ उन صانعين के अर्थों में है, जो विशेष मात्रा में द्रव्यों को जोड़कर कोई एक वस्तु तैयार करता है । अर्थात इन सभी शिल्पकारों में अल्लाह जैसा भी कोई शिल्पी है, जो इस प्रकार शिल्पकारी का नमूना प्रस्तुत कर सके जो अल्लाह तआला ने मानव के रूप में प्रस्तुत किया है ? परन्तु सबसे अधिक शुभ तथा मंगलमय वह अल्लाह ही है जो सभी शिल्पकारों से बड़ा तथा सबसे अच्छा कारीगर है ।

[3] طرائق बहुवचन है طريقة का, तात्पर्य आकाश है । अरब ऊपर-नीचे वस्तु को भी طريقة कहते हैं । आकाश भी ऊपर-नीचे है इसलिए उन्हें طرائق कहा । अथवा طريقة का अर्थ मार्ग है, आकाश फरिश्तों के आने-जाने अथवा सितारों के घूमने का मार्ग है, इसलिए उन्हें طرائق कहा गया ।

[4] خلق से तात्पर्य مخلوق है । अर्थात आकाशों को पैदा करके हम अपनी धरती की सृष्टि से अचेत नहीं हो गये अपितु हमने आकाशों को धरती पर गिरने से सुरक्षित रखा है ताकि सृष्टि का नाश न हो । अथवा अर्थ यह है कि हम सृष्टि की समस्याओं तथा उनके जीवन उपयोगी आवश्यकताओं से अचेत नहीं हो गये, बल्कि हम उनका प्रबन्ध करते हैं

(१८) तथा हम एक उचित मात्रा में आकाश से पानी बरसाते हैं,[1] फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं,[2] तथा हम उसके ले जाने पर निश्चयत: सामर्थवान है ।[3]

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾

(१९) इसी पानी के द्वारा हम तुम्हारे लिए खजूरों तथा अंगूरों के बाग़ उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उनमें बहुत से मेवे (फल) होते हैं, उन्हीं में से तुम खाते भी हो ।[4]

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾

(फ़तहुल क़दीर) । तथा कुछ ने यह भावार्थ वर्णन किये हैं कि धरती से जो कुछ निकलता अथवा प्रवेश करता है, उसी प्रकार आकाश से जो उतरता तथा चढ़ता है, सब उसके ज्ञान में है तथा प्रत्येक वस्तु पर वह दृष्टि रखता है तथा प्रत्येक स्थान पर वह अपने ज्ञान के आधार पर तुम्हारे साथ होता है । (इब्ने कसीर)

[1]अर्थात न अधिक कि जिससे विनाश फैल जाये तथा न इतना कम कि पैदावार तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त न हो ।

[2]अर्थात यह प्रबन्ध भी किया कि सारा पानी बरस कर बह न जाये बल्कि हमने स्रोतों, नहरों, नदियों तथा तालाबों एवं कुओं के रूप में उसे सुरक्षित भी किया है, (क्योंकि उन सबका उद्‌गम भी आकाशीय वर्षा ही है) ताकि उन दिनों में जब वर्षा न हो अथवा ऐसे क्षेत्रों में जहाँ वर्षा कम होती हो तथा पानी की आवश्यकता अधिक हो, उनसे पानी प्राप्त कर लिया जाये ।

[3]अर्थात जिस प्रकार हमने अपनी दया तथा कृपा से पानी का ऐसा विस्तृत प्रबन्ध किया है, वहीं हमें यह भी सामर्थ्य है कि पानी का तल इतना नीचा कर दें कि तुम्हारे लिए उनको प्राप्त करना असम्भव हो जाये ।

[4]अर्थात उन बागों में अंगूर तथा खजूर के अतिरिक्त अन्य बहुत से फल होते हैं जिनके स्वाद से तुम आनन्द प्राप्त करते हो तथा कुछ खाते हो ।

(२०) तथा वह वृक्ष जो सैना नामक पर्वत पर उगता है जो तेल निकालता है तथा खाने वाले के लिए सालन है ।[1]

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِن طُورِ سَيْنَاءَ تَنۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ﴿٢٠﴾

(२१) तुम्हारे लिए चौपाये पशुओं में भी बहुत बड़ी शिक्षा है । उनके पेटों से हम तुम्हें (दूध) पिलाते है तथा अन्य भी बहुत से लाभ तुम्हारे लिए उनमें हैं, उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो ।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

(२२) तथा उन पर एवं नावों पर तुम सवार कराये जाते हो ।[2]

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

(२३) नि:संदेह हमने नूह को उसके समुदाय की ओर (रसूल बनाकर) भेजा । उसने कहा हे मेरी जाति के लोगो ! अल्लाह की इबादत करो तथा उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते ?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) उसके समाज के काफ़िर प्रमुखों ने स्पष्ट कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही मनुष्य है, यह तुम पर श्रेष्ठता (तथा सम्मान) प्राप्त

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ

---

[1]इससे जैतून का वृक्ष तात्पर्य है, जिसका रस तेल के रूप में, फल व्यन्जन (सालन) के रूप में प्रयोग होता है । (सालन) को صبغ (रंग) कहा है क्योंकि रोटी रस में डूबो कर रंगी जाती है । तूर सीना (पर्वत) तथा उसका निकटवर्ती क्षेत्र विशेषरूप से इसकी उत्तम पैदावार का क्षेत्र है ।

[2]अर्थात प्रभु के इन उपहारों से तुम लाभान्वित होते हो, क्या वह इस योग्य नहीं कि उसकी कृतज्ञता व्यक्त करो तथा केवल उसी एक की इबादत (आराधना) तथा आज्ञापालन करो ?

أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

करना चाहता है ।[1] यदि अल्लाह ही को स्वीकार होता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता,[2] हमने तो इसे अपने पूर्वजों के समय में सुना ही नहीं ।[3]

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

(२५) नि:संदेह इस व्यक्ति को उन्माद है, तो तुम उसे एक निर्धारित समय तक ढील दो ।[4]

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾

(२६) नूह ने प्रार्थना की हे मेरे पालनहार ! इनके झुठलाने पर तू मेरी सहायता कर ।[5]

---

[1]अर्थात यह तो तुम्हारे जैसा ही मनुष्य है, यह किस प्रकार नबी तथा रसूल हो सकता है ? तथा यदि यह नबूअत तथा रिसालत का दावा कर रहा है, तो इसका मूल उद्देश्य इससे तुम पर श्रेष्ठता तथा उच्चता प्राप्त करना है।

[2]तथा यदि वास्तव में अल्लाह अपने रसूल के द्वारा हमें यह समझाना चाहता कि इबादत के योग्य केवल वही है तो वह किसी फ़रिश्ते को रसूल (संदेशवाहक) बनाकर भेजता न कि किसी मनुष्य को, वह आकर हमें एकेश्वरवाद की परिभाषा समझाता ।

[3]अर्थात इस का एकेश्वरवाद का आमन्त्रण एक निराला आमन्त्रण है, इस से पूर्व हम ने अपने पूर्वजों के समय में तो यह सुना ही नहीं ।

[4]यह हमें तथा हमारे पूर्वजों को मूर्तियों की पूजा करने के कारण मूर्ख तथा निर्बोध समझ रहा है तथा कहता है । लगता है कि यह स्वयं ही दीवाना है, इसे एक समय तक ढील दो, मृत्यु के साथ ही इसका आमन्त्रण भी समाप्त हो जायेगा । अथवा सम्भव है कि इसकी दीवानगी समाप्त हो जाये तथा इस आमन्त्रण को छोड़ दे ।

[5]साढ़े नौ सौ वर्ष तक सतर्क करने तथा आमन्त्रण देने के पश्चात अन्त में प्रभु से प्रार्थना की :

﴿ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ﴾

"(नूह ने) प्रभु से प्रार्थना की, मैं पराजित तथा कमजोर हूँ मेरी सहायता कर ।" *(सूर: अल-क़मर-१०)*

अल्लाह तआला ने प्रार्थना स्वीकार की तथा आदेश दिया कि मेरी संरक्षता तथा निर्देश के अनुसार नाव बनाओ ।

(२७) तो हम ने उनकी ओर प्रकाशना भेजी कि तू हमारी आँखों के समक्ष हमारी प्रकाशना के अनुसार एक नाव बना । जब हमारा आदेश आ जाये[1] तथा तन्दूर उबल पड़े[2] तो तू हर प्रकार के एक-एक जोड़े उस में रख ले [3] तथा अपने परिवार को भी, अतिरिक्त उनके जिनके विषय में हमारी बात पूर्व गुज़र चुकी है ।[4] सावधान ! जिन लोगों ने अत्याचार किया है उनके विषय में मुझसे कोई बात न करना, वे तो सब डुबोये जायेंगे ।[5]

فَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ أَنِ ٱصْنَعِ ٱلْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ ٱلتَّنُّورُ ۙ فَٱسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ ٱثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ ٱلْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَـٰطِبْنِى فِى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوٓا ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

(२८) जब तू तथा तेरे साथी नाव में भली प्रकार बैठ जाना तो कहना कि सभी प्रशंसायें अल्लाह के लिए ही हैं जिसने हम लोगों को अत्याचारियों से छुटकारा दिलाया ।

فَإِذَا ٱسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى ٱلْفُلْكِ فَقُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى نَجَّىٰنَا مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّـٰلِمِينَ ﴿٢٨﴾

---

[1]अर्थात उनके विनाश का आदेश आ जाये ।

[2]तन्दूर पर व्याख्या सूरः हूद में गुज़र चुकी है कि उचित बात यह है कि इससे तात्पर्य हमारे समाज का परिचित तन्दूर नहीं जिसमें रोटी पकाई जाती है, बल्कि धरती तात्पर्य है कि सारी धरती ही स्रोतों में परिवर्तित हो गयी । नीचे धरती से पानी स्रोतों के समान उबल पड़ा । नूह को निर्देश दिया जा रहा है कि जब पानी धरती से उबल पड़े ---

[3]अर्थात जीव, वनस्पति तथा फल प्रत्येक में से एक-एक जोड़ा (नर तथा मादा) नाव में रख ले ताकि सभी का वंश शेष रहे ।

[4]अर्थात जिनके विनाश का निर्णय उनके कुफ़्र तथा क्रूरता के कारण हो चुका है, जैसे नूह की पत्नी तथा उनका पुत्र ।

[5]अर्थात जब प्रकोप प्रारम्भ हो जाये तो इन अत्याचारियों में से किसी पर दया करने की आवश्यकता नहीं कि तू किसी की सिफ़ारिश करना प्रारम्भ कर दे, क्योंकि उनको जलमग्न करने का अन्तिम निर्णय हो चुका है ।

(२९) तथा कहना हे मेरे प्रभु ![1] मुझे सुरक्षित उतारना तथा तू ही उत्तम रूप से उतारने वाला है ।[2]

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٢٩

(३०) निसंदेह इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं,[3] तथा हम नि:संदेह परीक्षा लेने वाले हैं ।[4]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ۝٣٠

(३१) फिर उनके पश्चात हमने अन्य समुदाय भी पैदा किये ।[5]

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٣١

---

[1]नाव मे बैठकर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करना कि उसने अत्याचारियों को अन्त में जलमग्न करके उनसे छुटकारा प्रदान किया तथा नाव को सुरक्षित किनारे पर लगने की दुआ करना ।

[2]इसके साथ वह भी दुआ पढ़ ली जाये जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवारी पर वैठते समय पढ़ते थे । (सूर: *अल-जुखरूफ़*-१३ तथा १४)

[3]अर्थात नूह के इस वृतान्त में कि ईमान वालों को मोक्ष तथा काफिरों को नाश कर दिया गया, निशानियाँ हैं इस बात पर कि नबी जो कुछ अल्लाह की ओर से लेकर आते हैं, उनमें वे सच्चे हैं । इसके अतिरिक्त यह कि अल्लाह तआला का सामर्थ्य प्रत्येक वस्तु पर है तथा सत्य तथा असत्य के संघर्ष में प्रत्येक बात से वह परिचित है तथा समय आने पर उस पर नोटिस (सूचना) लेता है तथा झूठे लोगों की इस प्रकार पकड़ करता है कि उसकी पकड़ से कोई निकल नहीं पाता ।

[4]तथा हम नबियों तथा रसूलों के द्वारा यह परीक्षा लेते रहे हैं ।

[5]अधिकतर व्याख्याकारों के निकट नूह के समुदाय के पश्चात अल्लाह तआला ने जिस समुदाय को पैदा किया तथा उनमें रसूल भेजा वह 'आद' का समुदाय है क्योंकि अधिकतर स्थान पर नूह के समुदाय के उत्तराधिकारी के रूप में 'आद' के समुदाय का ही वर्णन आया है । कुछ के निकट यह 'समूद' का समुदाय है क्योंकि आगे चलकर उनके विनाश के विषय में वर्णन किया गया है कि صيحة (ज़ोरदार चीख़) ने उनको पकड़ लिया तथा यह प्रकोप समूद के समुदाय पर आया था । कुछ के निकट यह आदरणीय शुऐब का समुदाय 'मदयन' के निवासी हैं कि उनका भी विनाश चीख़ के कारण हुआ ।

(३२) फिर उनमें स्वयं उनमें से ही रसूल भी भेजा [1] कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नहीं,[2] तुम क्यों नहीं डरते ?

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٢﴾

(३३) तथा जाति के प्रमुखों [3] ने उत्तर दिया जो कुफ़्र करते थे तथा आख़िरत की मुलाकात को झुठलाते थे तथा हमने उन्हें साँसारिक जीवन में सुखी रखा था[4] कि यह तो तुम जैसा मुनष्य है, तुम्हारा ही खाद्य पदार्थ खाता है तथा तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है।[5]

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ﴿٣٣﴾

---

[1]यह रसूल भी हमने उन्हीं में से भेजा जिसका पालन-पोषण उन्हीं के बीच हुआ था, जिसको वे भली-भाँति पहचानते थे, उसके परिवार, घर तथा जन्म प्रत्येक बात से परिचित थे।

[2]उसने आकर सर्वप्रथम वही एकेश्वरवाद का आमन्त्रण दिया जो प्रत्येक नबी के आमन्त्रण तथा सतर्क करने का मूल बिन्दु रहा है।

[3]यह समाज के मुखिया ही प्रत्येक युग में नबियों तथा रसूलों एवं सत्यवादियों को झुठलाने में बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे हैं, जिसके कारण समाज का बहुमत ईमान लाने से वंचित रहता क्योंकि ये अत्यधिक प्रभावशाली लोग होते थे, समाज उन्हीं के पीछे चलने वाला होता था।

[4]अर्थात आख़िरत पर ईमान न होना तथा साँसारिक सुख-सुविधा का वैभव, ये दो मूल कारण थे अपने रसूल पर ईमान न लाने के। आज भी झूठे लोग इन्हीं कारणों के आधार पर सत्यवादियों का विरोध करते तथा सत्य के आमन्त्रण से मुख मोड़ते हैं।

[5]अत: उन्होंने यह कहकर इंकार कर दिया कि यह तो हमारी ही तरह खाता-पीता है, यह अल्लाह का रसूल किस प्रकार हो सकता है ? जैसे आज भी इस्लाम के बहुत से दावेदारों के लिए रसूल का मानव रूप स्वीकार करना अत्यन्त कठिन है।

(३४) तथा यदि तुमने अपने जैसे ही मनुष्य की अधीनता स्वीकार कर ली तो निःसंदेह तुम क्षतिग्रस्त हो ।[1]

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٣٤﴾

(३५) क्या यह तुम्हें इस बात का वचन देता है कि जब तुम मर कर केवल मिट्टी तथा अस्थि रह जाओगे, तो तुम फिर जीवित किये जाओगे ?

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾

(३६) नहीं नहीं, दूर तथा बहुत दूर है वह जिस का तुम वचन दिये जाते हो ।[2]

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾

(३७) जीवन तो केवल साँसारिक जीवन है जिसमें हम मरते-जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर उठाये जायेंगे ।

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾

(३८) यह तो बस वह व्यक्ति है जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है,[3] हम तो इस पर विश्वास लाने वाले नहीं हैं ।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

(३९) नबी ने प्रार्थना की कि प्रभु इनके झुठलाने

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٣٩﴾

---

[1]वह हानि ही है कि अपने ही जैसे मनुष्य को रसूल मानकर तुम उसका महत्व एवं सर्वोच्चता स्वीकार कर लोगे, क्योंकि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से श्रेष्ठ किस प्रकार हो सकता है ? यही वह शंका है जो रसूल के मनुष्य होने को अस्वीकार करने वालों के मस्तिष्क में रही है । यद्यपि अल्लाह तआला जिस मनुष्य को रिसालत के लिए चुन लेता है, तो वह उस रिसालत तथा प्रकाशना के कारण अन्य सभी नबी के अतिरिक्त मनुष्यों से महत्व तथा श्रेष्ठता में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सर्वोच्च हो जाता है ।

[2] هيهات जिसका अर्थ 'दूर' है, दो बार बल देने के लिए है ।

[3]अर्थात पुनः जीवित होने का वादा, यह एक मनगढ़न्त झूठ है जो यह व्यक्ति अल्लाह पर बाँध रहा है ।

पर तू मेरी सहायता कर।[1]

(४०) उत्तर मिला कि यह बहुत ही शीघ्र अपने किये पर पछताने लगेंगे।[2]

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَٰدِمِينَ ﴿٤٠﴾

(४१) अन्त में न्याय के नियमानुसार चीख[3] ने उन्हें पकड़ लिया तथा हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला,[4] तो अत्याचारियों के लिए दूरी हो।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّٰلِمِينَ ﴿٤١﴾

(४२) फिर उन के पश्चात हम ने अन्य भी सम्प्रदाय पैदा किये।[5]

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنۢ بَعْدِهِمْ قُرُونًا ءَاخَرِينَ ﴿٤٢﴾

(४३) न तो कोई समुदाय अपने समय से

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا

---

[1]अन्त में आदरणीय नूह की तरह इस ईशदूत (पैग़म्बर) ने भी अल्लाह के सदन में सहायता के लिए दुआ के हाथ प्रसार दिये।

[2] عما में ما अधिक है जो विभक्ति तथा संज्ञा के मध्य काल की कमी पर बल देने के लिए प्रयोग हुआ है। जैसे ﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ﴾ *सूर: आले-इमरान*-१५९ में ما अधिक है अर्थात अतिशीघ्र प्रकोप आने वाला है जिस पर यह पछतायेंगे। परन्तु उस समय पछताने से कोई लाभ न होगा।

[3]यह "चीख" कहते हैं कि आदरणीय जिब्रील की थी, कुछ विद्वान कहते हैं कि वैसे ही कड़ी चीख थी जिसके साथ प्रचन्ड आँधियाँ थीं। दोनों ने मिलकर उनको पल भर में विनाश के घाट उतार दिया।

[4] غثاء उस कूड़े करकट को कहते हैं जो बाढ़ के पानी के साथ होता है, जिसमें वृक्षों के खोखले, सूखे तने, तिनके तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुएँ होती हैं। जब बाढ़ का ज़ोर कम होता है तो यह भी बेकार पड़े हुए होते हैं। यही दशा उन झुठलाने वालों तथा घमण्डियों की थी।

[5]इससे तात्पर्य आदरणीय स्वालेह, आदरणीय लूत तथा आदरणीय शुऐब के समुदाय हैं। क्योंकि *सूर: अल-आराफ़* तथा *सूर: हूद* में इसी क्रम में इन घटनाओं का वर्णन है। कुछ के निकट इस्राईल की सन्तान तात्पर्य है। قرون बहुवचन है قرن का तथा यह समुदाय के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

आगे बढ़ा तथा न पीछे रहा।[1]

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) फिर हमने निरन्तर रसूल भेजे,[2] जिस समुदाय के पास जब-जब उसका रसूल आया उसने झुठलाया, तो हमने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया[3] तथा उन्हें कहानी बना दिया,[4] उन लोगों के लिए दूरी हो जो ईमान स्वीकार नहीं करते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٤٥﴾

(४५) फिर हमने मूसा को तथा उसके भाई हारून को अपनी निशानियाँ तथा स्पष्ट तर्क[5] के साथ भेजा।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

(४६) फ़िरऔन तथा उस की सेना की ओर, परन्तु उन्होंने गर्व किया तथा थे ही वे अभिमानी लोग।[6]

---

[1]अर्थात यह सभी समुदाय भी नूह के समुदाय तथा 'आद' की भाँति जब इनके विनाश का निर्धारित समय आ गया तो ध्वस्त हो गयीं। एक क्षण आगे-पीछे न हुआ। जैसे फ़रमाया : ﴿إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ﴾

[2]تترا का अर्थ है एक के पश्चात दूसरा, निरन्तर तथा क्रमबद्ध।

[3]बर्बादी तथा विनाश में। अर्थात जिस प्रकार निरन्तर रसूल आये, उसी प्रकार रिसालत को झुठलाने पर यह समुदाय एक के पश्चात दूसरे प्रकोप से ग्रसित होते रहे तथा विनाश के घाट उतरते रहे।

[4]जिस प्रकार أعاجيب बहुवचन है أعجوبة का (विस्मयकारी वस्तु अथवा आश्चर्यजनक बात) उसी प्रकार أحاديث बहुवचन है أحدوثة का, अर्थ है मुखों से सुनी घटनायें तथा कथायें।

[5]आयत से तात्पर्य वे नौ आयात (निशानियाँ) हैं जिनका वर्णन सूर: *आराफ़* में है, जिनकी व्याख्या गुज़र चुकी है तथा سلطان مبين से तात्पर्य खुला प्रमाण तथा तर्क एवं निशानियाँ (प्रतीक) हैं जिसका कोई उत्तर फ़िरऔन एवं उसके दरबारियों से न बन पड़ा।

[6]गर्व तथा अपने को बड़ा समझना, इसका आधारभूत कारण भी वही आख़िरत पर विश्वास करने से इंकार तथा सांसारिक सुख-सुविधा की बहुतायत ही थी, जिसका वर्णन पूर्व के समुदायों की घटनाओं में गुज़र चुका है।

(४७) कहने लगे, क्या हम अपने जैसे दो व्यक्तियों पर ईमान लायें ? जबकि स्वयं उनका समुदाय हमारे आधीन है ।[1]

فَقَالُوٓا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَٰبِدُونَ ﴿٤٧﴾

(४८) तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, अन्त में वे लोग भी विनाश प्राप्त लोगों में सम्मिलित हो गये ।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾

(४९) तथा हमने तो मूसा को किताब भी दी कि लोग सीधे मार्ग पर आ जायें ।[2]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

(५०) तथा हमने मरियम के पुत्र तथा उसकी माता को एक निशानी बनाया,[3] तथा उन दोनों को उच्च स्वच्छ स्थिरता वाले तथा प्रवाहित पानी[4] वाले स्थान में शरण दी ।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُۥٓ آيَةً وَآوَيْنَٰهُمَآ إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾

---

[1]यहाँ भी इंकार का तर्क उन्होंने आदरणीय मूसा तथा हारून का 'मानव' होना ही प्रस्तुत किया तथा उसी मनुष्य होने पर बल देने के लिए उन्होंने कहा कि यह दोनों उसी समुदाय के व्यक्ति हैं जो हमारे दास हैं ।

[2]इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि आदरणीय मूसा को तौरात फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों को जलमग्न करने के पश्चात प्रदान की गयी तथा तौरात के अवतरित होने के पश्चात अल्लाह तआला ने किसी समुदाय को सामूहिक रूप से प्रकोप के द्वारा नाश नहीं किया वल्कि मुसलमानों को यह आदेश दिया जाता रहा कि वह काफ़िरों से धर्मयुद्ध करें ।

[3]क्योंकि आदरणीय ईसा का जन्म बिना पिता के हुआ जो प्रभु की शक्ति का प्रतीक है, जिस प्रकार आदम को बिना माता-पिता तथा हव्वा को बिना मादा के आदरणीय आदम से तथा अन्य सभी मनुष्यों को माता-पिता के समागम से पैदा करना उसकी निशानियों में से है ।

[4] ربوة (उच्च स्थान) से वैतुल मोकद्दस तथा مَعين (प्रवाहित स्रोत) से वह स्रोत तात्पर्य है जो एक कथन के आधार पर ईसा के जन्म के समय अल्लाह ने अप्राकृतिक रूप से आदरणीय मरियम के पैरों तले से प्रवाहित किया था जैसा कि सूरः *मरियम* में गुज़रा ।

(५१) हे पैग़म्बरो ! हलाल (वैध) वस्तुयें खाओ तथा पुण्य के कार्य करो।[1] तुम जो कुछ कर रहे हो उससे मैं भली-भाँति अवगत हूँ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُوا۟ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَٱعْمَلُوا۟ صَٰلِحًا ۖ إِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

---

[1] طيبات से तात्पर्य पवित्र एवं स्वादिष्ट वस्तुयें हैं, कुछ ने इसका अनुवाद (उचित) वस्तुयें किया है। दोनों ही अपने स्थान पर उचित हैं क्योंकि प्रत्येक पवित्र वस्तु अल्लाह ने उचित (हलाल) की हैं तथा प्रत्येक उचित (हलाल) वस्तु पवित्र एवं स्वादिष्ट हैं। अपवित्र को अल्लाह तआला ने निषेध (हराम) किया है कि वे प्रभाव तथा परिणाम के आधार पर पवित्र नहीं है चाहे अपवित्र भोजन करने वाले को समाज में अपने सामाजिक रीति तथा व्यवहार के कारण उनमें एक प्रकार स्वाद ही प्रतीत होता हो। पुण्य कार्य वह है जो क़ुरआन तथा हदीस में वर्णित धार्मिक नियमों के आधार पर किया जाये, न कि वह जो लोगों को अच्छा प्रतीत हों क्योंकि लोगों को तो धार्मिक नियमों में नई बातों का मिश्रण भी अच्छा लगता है। बल्कि धर्म में परिवर्तन कर नई बातों का मिश्रण करने वालों के यहाँ नवीनता का जितना महत्व है उतना तो धार्मिक रूप से अनिवार्य तथा सुन्नत द्वारा प्रमाणित कार्यों का भी नहीं है। हलाल खाने के साथ पुण्य कार्यों के करने से ज्ञात होता है कि इनका आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है तथा यह एक-दूसरे के पूरक हैं। हलाल खाने से पुण्य के कार्य करने में सरलता तथा पुण्य कार्य करने वाले व्यक्ति को हलाल खाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। तथा उसी पर सन्तोष करने का पाठ पढ़ाता है। इसीलिए अल्लाह ने सभी पैगम्बरों को इन दोनों बातों का आदेश दिया है। अत: सभी पैग़म्बर परिश्रम करके हलाल धन कमाने तथा खाने का प्रबन्ध करते रहे, जिस प्रकार आदरणीय दाऊद के विषय में आता है «كَانَ يَأْكُلُ مِنْ كَسْبِ يَدِهِ» (सहीह बुख़ारी अल-बोयू बाब कस्बुर रजुले व अमलिहि बेयदेही) अपने हाथों की कमाई से खाते थे। तथा नबी सल्लल्लाहु इजार:, वसल्लम ने फ़रमाया : "प्रत्येक नबी ने बकरियाँ चराई हैं, मैंने भी मक्कावासियों की बकरियाँ कुछ किरातों पारिश्रमिक पर चराता रहा हूँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल इजारत, बाबु राअयिल गनमें अला करारीत) आजकल ब्लैक मेलरों, स्मगलरों, रिश्वत तथा ब्याज खाने वालों एवं अन्य हराम खाने वालों ने मेहनत मज़दूरी करके हलाल धन कमाने वालों को तुच्छ तथा निम्न श्रेणी का बनाकर रख दियाहै, जबकि वास्तविक रूप से धर्म में इसके विपरीत है। एक इस्लामी समाज में हराम खाने वालों के लिए मान-सम्मान का कोई स्थान नहीं है चाहे वे विश्व के कितने भी बड़े कोष के स्वामी क्यों न हों। आदर तथा सम्मान के अधिकारी केवल वे व्यक्ति हैं जो श्रम करके हलाल धन खाते हैं, चाहे वह रूखी-सूखी ही हो। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर बड़ा बल दिया है तथा फ़रमाया है कि अल्लाह तआला हराम कमाई वाले का दान स्वीकार नहीं करता तथा उसकी दुआ भी स्वीकार नहीं करता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात बाबु क़बूलिस्सदकते मिनल कसबित्तैयेबे)

وَإِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

(५२) नि:संदेह तुम्हारा यह धर्म एक ही धर्म है[1] तथा मैं ही तुम सब का प्रभु हूँ, तो तुम मुझसे डरते रहो।

فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) फिर उन्होंने स्वयं (ही) अपनी बात (धर्म) के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए, प्रत्येक सम्प्रदाय उसके पास जो कुछ है उसी पर गर्व कर रहा है।

فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾

(५४) तो आप भी उन्हें उनकी अचेतन अवस्था में कुछ समय पड़ा रहने दें।[2]

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) क्या ये (इस प्रकार) समझ बैठे हैं कि हम जो कुछ भी उनका धन तथा सन्तान बढ़ा रहे हैं।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) वे उनके लिए भलाईयों में शीघ्रता कर रहे हैं? नहीं, नहीं, बल्कि ये समझते ही नहीं।

إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) नि:संदेह जो लोग अपने प्रभु के भय से डरते हैं।

وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जो अपने प्रभु की आयतों पर ईमान रखते हैं।

---

[1] أمة से तात्पर्य धर्म है, तथा एक होने का अर्थ यह है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की इबादत का आमन्त्रण दिया है परन्तु लोग ऐकश्वरवाद को छोड़कर अलग-अलग गुटों तथा सम्प्रदायों में बट गये हैं। तथा प्रत्येक गुट अपने विश्वास तथा कर्म पर प्रसन्न है चाहे वह सत्य से कितना ही दूर हो।

[2] غمرة अधिक जल की मात्रा को कहते हैं जो धरती को ढक लेती है। भटकावे के मार्ग भी इतने अंधकारमय होते हैं कि उसमें घिरे मनुष्य की दृष्टि से सत्य ओझल ही रहता है। غمرة से तात्पर्य आश्चर्य, विस्मय, अचेत तथा अपमान है, आयत में धमकी के आधार पर इनको छोड़ने का आदेश है, उद्देश्य, भाषण तथा शिक्षा से रोकना नहीं है।

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा जो अपने प्रभु के साथ किसी को साझी नहीं बनाते।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं तथा उनके दिल काँपते हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।[1]

أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾

(६१) यही हैं जो शीघ्र-शीघ्र पुण्य प्राप्त कर रहे हैं तथा यही हैं जो उनकी ओर दौड़ जाने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

(६२) हम किसी प्राणी को उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं देते,[2] हमारे पास एक किताब है जो सत्य ही बोलती है, उनके ऊपर तनिक भी अत्याचार न होगा।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) बल्कि उनके दिल उस ओर से अचेत हैं तथा उनके लिए इसके अतिरिक्त भी बहुत से कर्म हैं[3] जिन्हें वे करने वाले हैं।

---

[1]अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय करते हैं परन्तु अल्लाह से डरते भी रहते हैं कि किसी आलस्य अथवा त्रुटि के कारण हमारा कर्म अथवा दान अस्वीकार न हो जाये। हदीस में आता है, आदरणीय आयशा ने पूछा, "डरने वाले कौन हैं ? वे जो शराब पीते, कुकर्म करते तथा चोरियाँ करते हैं ?" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, बल्कि यह वे लोग हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा (व्रत) रखते हैं तथा दान पुण्य करते हैं, परन्तु डरते रहते हैं कि कहीं यह अस्वीकार न हो जायें। (तिर्मिज़ी तफ़सीर सूर: अल-मोमिनून तथा मुसनद अहमद ६।१६० तथा १९५)

[2]ऐसी ही आयत सूर: अल-बक़र: के अन्त में गुज़र चुकी है।

[3]अर्थात शिर्क (मूर्तिपूजा तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की इबादत करना) के अतिरिक्त अन्य महापाप अथवा वे कर्म तात्पर्य हैं जो ईमानवालों के कर्म (अल्लाह के भय तथा एकेश्वरवाद पर ईमान आदि) के विपरीत हैं। फिर भी भावार्थ दोनों का एक ही है।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) यहाँ तक कि जब हमने उनके सम्पन्न लोगों को यातना में जकड़ लिया[1] तो वे बिलबिलाने लगे।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

(६५) आज मत बिलबिलाओ, नि:संदेह तुम हमारे समक्ष सहायता न किये जाओगे।[2]

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) मेरी आयतें तो तुम्हारे समक्ष पढ़ी जाती थीं,[3] फिर भी तुम अपनी ऐड़ियों के बल उल्टे भागते थे।[4]

---

[1] مُترفين से तात्पर्य सुख-सुविधा प्राप्त (सम्पन्न) लोग हैं। प्रकोप तो धनवान तथा निर्धन दोनों पर होता है परन्तु धनवानों का नाम विशेष रूप से इसलिए लिया गया है कि समाज का नेतृत्व साधारणतया इन्हीं के हाथ में होता है, वह जिस ओर चाहें, समाज का मुख फेर सकते हैं। यदि वे अल्लाह के आदेशों की अवहेलना का मार्ग अपनायें तथा उस पर दृढ़ता से डटे रहें तो उन्हीं की देखा-देखी समाज के लोग भी टस से मस नहीं होते तथा क्षमा एवं खेद व्यक्त करने की ओर नहीं आते। यहाँ مُترفين से तात्पर्य वे काफ़िर हैं जिनको धन-दौलत से परिपूर्ण तथा सन्तान एवं सेवक प्रदान करके अवसर दिया गया। जिस प्रकार कि कुछ आयतों के पूर्व उनका वर्णन किया गया है। अथवा तात्पर्य चौधरी तथा नेता प्रकार के लोग हैं। तथा प्रकोप से तात्पर्य यदि साँसारिक है तो बद्र के युद्ध में जो मक्का के काफ़िर मारे गये बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के परिणाम स्वरूप भूख तथा अकाल का प्रकोप आ पड़ा था वह तात्पर्य है अथवा फिर आख़िरत की यातना है। परन्तु यह पूर्व के वाक्य क्रम से दूर है।

[2]अर्थात संसार में अल्लाह की यातना भुगतने के पश्चात कोई चीख पुकार, तथा करूणा दया की विनती उन्हें अल्लाह की पकड़ से छुड़ा नहीं सकती। इसी प्रकार आख़ेरत की यातना से छुड़ाने वाला अथवा सहायता करने वाला कोई नहीं होगा।

[3]अर्थात क़ुरआन मजीद अथवा अल्लाह के आदेश जिन में पैग़म्बर की कथनी करनी भी सम्मिलित हैं।

[4] نكـوص का अर्थ है رجعت قهقرى (उल्टे पैर लौटना) परन्तु रूपक के रूप में मुख मोड़ना तथा पलट जाने के अर्थ तथा भावार्थ में प्रयोग होता है। अर्थात अल्लाह के आदेश सुनकर तुम मुख मोड़ लेते थे तथा उनसे भागते थे।

(६७) अकड़ते ऐंठते,[1] कथा बनाते उसे छोड़ देते थे ।[2]

مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

(६८) क्या इन्होंने इस बात पर चिन्तन तथा विचार नहीं किया ?[3] बल्कि इन के पास वह आया जो इनके पूर्वजों के पास नहीं आया था ?[4]

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

(६९) अथवा इन्होंने अपने पैग़म्बर को पहचाना नहीं कि उसके इंकार करने वाले हो रहे हैं ।[5]

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

(७०) अथवा यह कहते हैं कि इसका माथा

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ

---

1 بـــه में सर्वनाम को अधिकाँश व्याख्याकारों ने البيت العتيق (ख़ानए-कआबा अथवा हरम) की ओर फेरा है । अर्थात उन्हें अपने को काअबा के पुजारी तथा उसके सेवक एवं रक्षक होने का जो गर्व था, उस आधार पर अल्लाह की आयतों का इंकार किया तथा कुछ ने पवित्र क़ुरआन की ओर फेरा है तथा अर्थ यह है कि क़ुरआन सुनकर उनके हृदय में अभिमान अहंकार उत्पन्न होता है, जो उन्हें क़ुरआन पर ईमान लाने से रोक देता है ।

2 سمر का अर्थ है रातों में बातें करना । यहाँ इसका अर्थ विशेष रूप से उन बातों के हैं जो क़ुरआन करीम तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में वे करते थे तथा उसके कारण सत्य की बातें सुनने तथा स्वीकार करने से इंकार कर देते अर्थात छोड़ देते । तथा कुछ ने هجر का अर्थ बकवास तथा कुछ ने अश्लील बातें की हैं । अर्थात रातों की वार्तालाप में तुम क़ुरआन के महत्व पर बकवास करते हो अथवा असभ्य तथा अश्लील बातें करते हो । जिनमें कोई भलाई नहीं (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

3 बात से तात्पर्य क़ुरआन करीम है । अर्थात इस पर विचार कर लेते तो उन्हें इस पर ईमान लाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता ।

4 यह أم विच्छेद (منقطعة) अथवा बात बदलने अर्थात انتقالية (वरन्) के अर्थ में है । अर्थात इनके पास वह धर्म तथा धार्मिक नियम आये हैं जिससे इनके पूर्वज अज्ञान काल में वंचित रहे । जिस पर इन्हें अल्लाह की कतज्ञता करनी चाहिए तथा इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए था ।

5 यह चेतावनी के रूप में है क्योंकि वह पैग़म्बर के वंश, जाति तथा इसी प्रकार उसकी सत्यवादिता, अमानत, सच्चाई तथा व्यवहार एवं चरित्र की महानता को जानते थे तथा इसको स्वीकार करते थे ।

بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾

फिर गया है ? [1] बल्कि वह तो उन के पास सत्य लेकर आया है। हाँ, इनमें से अधिकतर सत्य से चिढ़ने वाले हैं।[2]

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) यदि सत्य ही उनकी इच्छाओं का अनुयायी हो जाये, तो धरती तथा आकाश एवं उनके मध्य जितनी वस्तुयें हैं सब अस्त-व्यस्त हो जायें।[3] सत्य तो यह है कि हमने उन्हें उनकी शिक्षा पहुँचा दी है, परन्तु वे अपनी शिक्षा से मुख मोड़ने वाले हैं।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾

(७२) क्या आप उनसे कोई पारिश्रमिक चाहते हैं ? याद रखिये, आपके प्रभु का पारिश्रमिक अति श्रेष्ठ है, तथा वह सर्वश्रेष्ठ जीविका पहुँचाने वाला है।

وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾

(७३) निःसंदेह आप तो उन्हें सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हैं।

---

[1] यह भी धमकी तथा चेतावनी के रूप में ही है अर्थात इस पैग़म्बर ने ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत किया है जिसका समतुल्य प्रस्तुत करने से दुनिया विवश है, इसी प्रकार इसकी शिक्षायें मनुष्य जाति के लिए कृपा तथा शान्ति एवं स्थिरता का कारण है। क्या ऐसा क़ुरआन तथा ऐसी शिक्षायें ऐसा व्यक्ति प्रस्तुत कर सकता है जो दीवाना तथा पागल हो ?

[2] अर्थात उनके मुख फेरने तथा अहंकार का मूल कारण सत्यता से उनकी घृणा है, जो दीर्घकाल से असत्य के मार्ग पर चलने के कारण उनके अंदर उत्पन्न हो गयी है।

[3] सत्य से तात्पर्य धर्म तथा धार्मिक नियम हैं। अर्थात यदि धर्म उनकी इच्छानुसार अवतरित हो तो स्पष्ट बात है कि धरती तथा आकाश का सारा प्रबन्ध ही छिन्न-भिन्न हो जाये। जैसे वह चाहते हैं कि एक देवता के बजाय बहुत से देवता हों, यदि ऐसा वास्तव में हो तो क्या सृष्टि की व्यवस्था ठीक रह सकती है ? तथा इसी प्रकार की अन्य उनकी इच्छायें हैं।

(७४) तथा नि:संदेह जो लोग आखिरत पर विश्वास नहीं रखते वे सीधे मार्ग से मुड़ जाने वाले हैं ।[1]

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٤﴾

(७५) तथा यदि हम उन पर कृपा करें तथा उनकी कठिनाई दूर कर दें तो यह तो अपनी-अपनी दुष्टता पर अधिक दृढ़ रहकर अधिक भटकने लगेंगे ।[2]

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ لَّلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾

(७६) तथा हमने उन्हें यातना में भी जकड़ा, फिर भी ये लोग न तो अपने प्रभु के समक्ष झुके तथा न विनती का मार्ग अपनाया ।[3]

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾

---

[1]अर्थात सीधे मार्ग से उनका मुख मोड़ना आख़िरत पर ईमान न होना है ।

[2] इस्लाम के विरूद्ध उनके दिलों में जो द्वेष तथा घृणा थी तथा कुफ़्र तथा शिर्क के दलदल में जिस प्रकार वे फँसे हुए थे इसमें उनका वर्णन है ।

[3]प्रकोप से तात्पर्य यहाँ वह पराजय है जो बद्र के युद्ध में मक्का के काफ़िरों की हुई, जिसमें उनके सत्तर आदमी मारे गये थे अथवा वह अकाल का प्रकोप है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शाप के परिणाम स्वरूप आया था । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की थी «اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ». (सहीह बुखारी किताबुद दआवात, बाबुद दुआ अलल मुशरीकीन तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मसाजिद वाव इस्तहवाबिल क़ुनूत फ़ी जमी इस्सलात इज़ा नज़लत बिलमुस्लिमीन नाज़िला:) "हे अल्लाह ! जिस प्रकार आदरणीय यूसुफ़ के समय में सात वर्ष अकाल रहा, उसी प्रकार अकाल से इनको पीड़ित करके उनके समक्ष मेरी सहायता कर ।" अत: मक्का के काफ़िर इस अकाल से पीड़ित किये गये, जिस पर आदरणीय अबू सुफियान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये तथा उन्हें अल्लाह का तथा सम्बन्ध का वास्ता देकर कहा कि अब तो हम पशुओं के चर्म तथा रक्त तक खाने पर विवश हो गये हैं जिस पर आयत अवतरित हुई । (इब्ने कसीर)

(७७) यहाँ तक कि जब हमने उन पर कड़े प्रकोप का द्वार खोल दिया तो उसी समय तुरन्त निराश हो गये ।[1]

حَتّٰىٓ اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

(७८) वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिए कान, आँखें तथा दिल बनाया, परन्तु तुम बहुत कम कृतज्ञता व्यक्त करते हो ।[2]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७९) तथा वही है जिसने तुम्हें (पैदा करके) धरती पर फैला दिया तथा उसी की ओर तुम एकत्रित किये जाओगे ।[3]

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

(८०) तथा यह वही है जो जिलाता तथा मारता है तथा रात्रि-दिन के फेरबदल[4] करने का मालिक भी वही है, क्या तुमको समझ बूझ नहीं ?[5]

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८१) बल्कि उन लोगों ने भी वही बात कही जो पूर्व के लोग कहते चले आये हैं ।

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

---

[1]इससे सांसारिक यातना भी तात्पर्य हो सकती है तथा आख़िरत की भी, जहाँ वे सभी सुख तथा पुण्य से निराश तथा वंचित होंगे तथा सभी आशायें टूट जायेंगी ।

[2]अर्थात बुद्धि तथा समझ एवं सुनने की ये शक्तियाँ प्रदान कीं ताकि उनके द्वारा वह सत्य को पहचानें, सुनें तथा उसे स्वीकार करें । यही इन उपहारों की कृतज्ञता है । परन्तु यह कृतज्ञता व्यक्त करने वाले अर्थात सत्य को अपनाने वाले कम ही हैं ।

[3]इसमें अल्लाह की महिमा का वर्णन है कि जिस प्रकार तुम्हें पैदा करके विभिन्न क्षेत्रों में फैला दिया है, तुम्हारे रंग भी एक-दूसरे से भिन्न हैं, भाषायें भी भिन्न तथा व्यवहार एवं संस्कृति भी भिन्न । फिर एक समय आयेगा कि तुम सबको जीवित करके वह अपने दरबार में एकत्रित करेगा ।

[4]अर्थात रात्रि के पश्चात दिन तथा दिन के पश्चात रात्रि का आना, फिर रात-दिन का छोटा बड़ा होना ।

[5]जिससे तुम यह समझ सको कि यह सभी कुछ उस एक अल्लाह की ओर से है, जो प्रत्येक वस्तु पर प्रभावशाली है तथा उसके समक्ष प्रत्येक वस्तु झुकी हुई है ।

(८२) कहा कि जब हम मर कर मिट्टी तथा अस्थि हो जायेंगे, क्या फिर भी हम अवश्य खड़े किये जायेंगे ?

قَالُوٓا۟ ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَـٰمًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٨٢﴾

(८३) हमसे तथा हमारे पूर्वजों से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं, यह तो केवल अगले लोगों के ढकोसले हैं ।[1]

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَءَابَآؤُنَا هَـٰذَا مِن قَبْلُ إِنْ هَـٰذَآ إِلَّآ أَسَـٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

(८४) पूछिये तो कि धरती तथा उसकी कुल वस्तुयें किसकी हैं ? बताओ यदि जानते हो ।

قُل لِّمَنِ ٱلْأَرْضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾

(८५) वे तुरन्त उत्तर देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए तो फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते ।

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾

(८६) पूछिये, सातों आकाशों का तथा अति सम्मानित अर्श का प्रभु कौन है ?

قُلْ مَن رَّبُّ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ ٱلسَّبْعِ وَرَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾

(८७) वे लोग उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है । कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते ?[2]

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾

(८८) पूछिये कि सभी वस्तुओं का अधिकार किस के हाथ में है जो शरण देता है[3] तथा

قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ

---

[1] أساطير बहुवचन है أسطورة का अर्थात مسطرة مكتوبة लिखी हुई बातें, कथायें । अर्थात पुन: जीवित होकर उठने का वादा कब से होता चला आ रहा है हमारे पूर्वजों से ! परन्तु अभी तक तो कार्यान्वित नहीं हुआ, जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह कथायें हैं जो पूर्वकालिक लोगों ने अपनी किताबों में लिख दी हैं जो नकल पर नकल होती चली आ रही हैं, जिनकी कोई वास्तविकता नहीं ।

[2]अर्थात जब तुम्हें स्वीकार है कि धरती का तथा उसमें स्थिति प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल एक मात्र अल्लाह ही है तथा आकाश एवं महान अर्श का स्वामी भी वही है तो भी तुम्हें यह स्वीकार करने में क्यों दुविधा है कि इबादत के योग्य भी वही एक अल्लाह है, फिर तुम उसके एक होने को स्वीकार करके उसके प्रकोप से बचने का प्रयत्न क्यों नहीं करते ?

[3]अर्थात जिसकी वह रक्षा करना चाहे तथा अपने शरण में ले ले, क्या उसे कोई हानि पहुँचा सकता है ?

جُيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٨٨

जिसकी तुलना में कोई शरण नहीं दिया जाता,[1] यदि तुम जानते हो तो बता दो ?

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ۝٨٩

(८९) यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम पर किधर से जादू हो जाता है ?[2]

---

[1]अर्थात जिसको वह हानि पहुँचाना चाहे तो क्या सम्पूर्ण सृष्टि में अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी शक्ति है कि वह उसे हानि से सुरक्षित कर ले तथा अल्लाह के समक्ष अपनी शरण में ले ले ?

[2]अर्थात फिर तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है कि इसे स्वीकार करने के उपरान्त तुम दूसरों को उसकी इबादत में सम्मिलित करते हो ? क़ुरआन करीम का यह स्पष्ट वर्णन है कि मक्का के मूर्तिपूजकों को अल्लाह तआला के प्रभु, उसके स्रष्टा, स्वामी तथा पोषक होने का इंकार नहीं था, बल्कि वह यह सभी बातें स्वीकार करते थे, उन्हें केवल एक अल्लाह की पूजा से इंकार था। अर्थात इबादत केवल एक अल्लाह की नहीं करते थे, बल्कि उसमें अन्यों को भी सम्मिलित करते थे। इसलिए नहीं कि आकाश तथा धरती की सृष्टि अथवा उसके प्रबन्ध में कोई अन्य भी उसका साझीदार है, बल्कि मात्र इस भ्रम के आधार पर कि यह भी अल्लाह के निकटवर्ती भक्त थे, उनको भी अल्लाह ने कुछ अधिकार दे रखे हैं तथा हम उनके द्वारा अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं। यही भ्रम आजकल मृत-पूजक अहले बिदअत (इस्लाम धर्म में नवीन विचार धारा का समावेश करने वाले) को है जिसके आधार पर वह मृत लोगों को सहायता के लिए पुकारते हैं, उनके नाम का भोग-प्रसाद चढ़ाते हैं तथा उनको अल्लाह की इबादत में सम्मिलित बताते हैं। यद्यपि अल्लाह ने कहीं भी यह नहीं कहा कि मैंने किसी मृत महात्मा, महापुरूष अथवा नबी को अधिकार दे रखे हैं, तुम उनके द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करो, अथवा उन्हें सहायता के लिए पुकारो अथवा उनके नाम का भोग-प्रसाद चढ़ाओ। इसीलिए अल्लाह ने आगे फ़रमाया कि हमने सत्य पहुँचा दिया। अर्थात यह भली प्रकार से स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं, तथा यदि यह अल्लाह की इबादत में अन्यों को सम्मिलित कर रहे हैं तो इसलिए नहीं कि उनके पास इसका कोई प्रमाण है, नहीं, अपितु मात्र एक-दूसरे की देखा-देखी तथा पूर्वजों के अनुकरण के कारण शिर्क का कार्य कर रहे हैं। वरन् वास्तव में यह पूर्णरूप से झूठे हैं। न उसकी कोई सन्तान है न उसका कोई साझीदार, यदि ऐसा होता तो प्रत्येक साझीदार अपने भाग की सृष्टि का प्रबन्ध अपनी इच्छा अनुसार करता तथा प्रत्येक साझीदार अन्य पर प्रभावशाली होने का प्रयत्न करता। तथा जब ऐसा नहीं है तथा सृष्टि के प्रबन्ध में ऐसी कोई खींचा तानी नहीं है तो नि:संदेह अल्लाह तआला इन सभी बातों से पवित्र तथा उच्चतम है, जो मूर्तिपूजक उसके सम्बन्ध में बताते हैं।

بَلْ أَتَيْنَٰهُم بِٱلْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) सत्य यह है कि हमने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है तथा ये नि:संदेह झूठे हैं।

مَا ٱتَّخَذَ ٱللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُۥ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٩١﴾

(९१) न तो अल्लाह ने किसी को पुत्र बनाया तथा न उसके साथ अन्य कोई देवता है, वरन् प्रत्येक देवता अपनी सृष्टि को लिए-लिए फिरता तथा प्रत्येक एक-दूसरे पर उच्च होने का प्रयत्न करते। जो गुण यह बताते हैं अल्लाह उन से पवित्र है।

عَٰلِمِ ٱلْغَيْبِ وَٱلشَّهَٰدَةِ فَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

(९२) वह छिपी-प्रकट का जानने वाला है तथा जो शिर्क यह करते हैं उससे सर्वोपरि है।

قُل رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّى مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

(९३) (आप) दुआ (प्रार्थना) करें कि हे मेरे प्रभु! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस का वचन इन्हें दिया जा रहा है।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِى فِى ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٩٤﴾

(९४) तो हे मेरे प्रभु! तू मुझे इन अत्याचारियों के गुट में न करना।[1]

وَإِنَّا عَلَىٰٓ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَٰدِرُونَ ﴿٩٥﴾

(९५) तथा हम जो कुछ वचन उन्हें दे रहे हैं सब आपको दिखा देने का सामर्थ्य रखते हैं।

ٱدْفَعْ بِٱلَّتِى هِىَ أَحْسَنُ ٱلسَّيِّئَةَ ۚ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

(९६) बुराई को इस प्रकार से दूर करें जो पूर्णत: भलाई वाला हो,[2] जो कुछ ये वर्णन करते हैं, उससे हम भली-भाँति परिचित हैं।

---

[1] अत: हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ करते थे।

«وإذَا أَرَدْتَ بِقَومٍ فِتْنَةً فَتَوَفَّنِي إِلَيكَ غَيرَ مَفْتُونٍ» .

"हे अल्लाह! जब तू किसी समुदाय पर परीक्षा अथवा यातना भेजने का निर्णय कर ले तो उससे पूर्व ही मुझे दुनिया से उठा ले।"(तिर्मिज़ी तफ़सीर सूर: साद तथा मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ २४३)

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया,

(९७) तथा दुआ करें कि हे मेरे प्रभु ! मैं शैतानों की शंकाओं से तेरी शरण चाहता हूँ ।[1]

وَ قُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

(९८) तथा हे मेरे प्रभु ! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि वे मेरे पास आ जायें ।[2]

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

(९९) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे प्रभु ! मुझे वापस लौटा दे ।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

(१००) कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर पुण्य का कार्य करूँ ।[3] कदापि ऐसा नहीं

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ

"बुराई इस ढंग से दूर करो जो अच्छा हो, इसका परिणाम यह होगा कि तुम्हारा शत्रु भी तुम्हारा घनिष्ठ मित्र बन जायेगा ।" (*हा॰मीम॰सजदा-३४,३५*)

[1]अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शैतान से इस प्रकार शरण माँगते أعوذ بالله السميع العليم من الشيطان الرجيم من همزه و نفخه و نفثه (अबू दाऊद, किताबुस सलात, बाबु मा युस्तफ़्तहु बिही स्सलात मिनद दुआ तिर्मिज़ी बाब मा यक़ूलो इन्द इफ़्तेताहिस्सलाते)

[2]इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बलपूर्वक कहा कि प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य का प्रारम्भ अल्लाह के नाम से करो अर्थात बिस्मिल्लाह पढ़कर । क्योंकि अल्लाह की याद शैतान से दूर करने वाली है । इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ माँगते थे «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَرَمِ، وأَعوذُ بِكَ مِنَ الهَدْمِ، ومِنَ الغَرَقِ، وأَعوذُ بكَ أَنْ يَتَخَبَّطَنِي الشَّيطَانُ عِنْدَ المَوتِ». (अबू दाऊद किताबुल वित्र बाब फ़िल् इस्तेआज:) रात को घबराहट में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ पढ़ते थे । «بِاسْمِ اللهِ، أَعُوذُ بِكَلِماتِ اللهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهِ، وَعِقَابِهِ، وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهِ، وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ» (मुसनद अहमद भाग २ पृष्ठ १८१, अबू दाऊद किताबुत तिब्ब, बाब कैफ़र्रोका तिर्मिज़ी अबवाबुल दअवात)

[3]यह कामना प्रत्येक काफ़िर मृत्यु के समय पुन: उठाये जाने के समय, अल्लाह के सदन में खड़े होते समय तथा नरक में ढकेले जाने के समय करता है तथा करेगा, परन्तु इसका कोई लाभ नहीं होगा । क़ुरआन करीम में इस विषय को विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । जैसे *सूर: मुनाफ़ीकून*-१० तथा ११, *सूर: इब्राहीम*-४४, *सूर: आराफ़*-५३, *अलिफ़॰लाम॰मीम॰ सजदा*-१२, *सूर: अनआम* २७ तथा २८, *सूर: अश्शूरा*-२४, *सूर: अल-मोमिन*-११ तथा १२, *सूर: फ़ातिर*-३७ तथा इसी प्रकार अन्य आयतें ।

كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا ۖ وَمِن وَرَائِهِم بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾

होने का[1] यह केवल एक कथन है जिस का यह कहने वाला है।[2] उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के पुन: जीवित होने वाले दिन तक।[3]

---

[1] كَلَّا डाँट-डपट के लिए है अर्थात ऐसा कभी नहीं हो सकता कि उन्हें पुन: दुनिया में भेज दिया जाये।

[2]इसका एक अर्थ तो यह है कि ऐसी बात है कि जो प्रत्येक काफ़िर प्राण निकलते समय कहता है। दूसरा अर्थ है कि केवल बात ही बात है, कर्म नहीं। यदि उन्हें पुन: भी दुनिया में भेज दिया जाये तो उनकी यह कथनी केवल कथनी ही रहेगी, पुण्य का कार्य करने का सौभाग्य फिर भी नहीं होगा। जैसे अन्य स्थान पर कहा।

﴿وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ﴾

"यदि उन्हें दुनिया में पुन: लौटा दिया जाये, तो फिर वही कार्य करेंगे जिनसे उन्हें रोका गया था।" (सूर: *अल-अन्आम*-२८)

आदरणीय कतादः फ़रमाते हैं, काफ़िर की इस कामना में हमारे लिए बड़ा पाठ है, काफ़िर दुनिया में अपने परिवार तथा क़बीले के पास जाने की कामना नहीं करेगा, वल्कि पुण्य के कार्य करने के लिए दुनिया में आने की कामना करेगा। इसलिए दुनिया के जीवन को लाभकारी क्षण जानते हुए अधिक से अधिक पुण्य के कार्य कर लिये जायें ताकि कल क़ियामत को यह कामना करने की आवश्यकता न हो। (इब्ने कसीर)

[3]दो वस्तु के मध्य पट तथा आड़ को برزخ कहा जाता है। दुनिया के जीवन तथा आख़िरत के जीवन के मध्य की जो अवधि है, उसे यहाँ برزخ कहा गया है। क्योंकि मरने के पश्चात मनुष्य का सम्बन्ध दुनिया से समाप्त हो जाता है तथा आख़िरत के जीवन का प्रारम्भ उस समय होगा जब सभी लोगों को पुन: जीवित किया जायेगा। यह मध्य का जीवन जो क़ब्र में अथवा पक्षी के पेट में अथवा जला देने की अवस्था में मिट्टी के कणों में गुज़रती है, वर्ज़ख़ का जीवन है। इंसान का यह अस्तित्व जहाँ भी तथा जिस रूप में भी होगा स्पष्टरूप से वह मिट्टी बन चुका होगा, अथवा राख बनाकर हवाओं में उड़ा दिया गया अथवा नदियों में बहा दिया गया होगा अथवा किसी पशु का भोजन बन गया होगा, परन्तु अल्लाह तआला सभी को एक नया रूप प्रदान कर हश्र के मैदान में एकत्रित करेगा।

(१०१) तो जब नरसिंघा में फूँक मार दी जायेगी, उस दिन न तो आपस के सम्बन्ध ही रहेंगे, न आपस की पूछताछ ।[1]

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝١٠١

(१०२) जिनकी तराज़ू का पलड़ा भारी हो गया वे तो मोक्ष प्राप्त करने वाले हो गये ।

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝١٠٢

(१०३) तथा जिनकी तराज़ू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपनी हानि स्वयं कर ली, जो सदैव के लिए नरक में चले गये ।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝١٠٣

(१०४) उनके मुख को आग झुलसाती रहेगी,[2] वे वहाँ कुरूप बने हुए होंगे ।[3]

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝١٠٤

(१०५) क्या मेरी आयतों का पाठ तुम्हारे समक्ष नहीं होता था ? फिर भी तुम उन को झुठलाते थे ।

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝١٠٥

(१०६) वे कहेंगे कि हे मेरे प्रभु ! हमारा दुर्भाग्य हम पर प्रभावशाली हो गया,[4] वास्तव में हम भटके हुए थे ।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۝١٠٦

---

[1] हश्र की भयानकता के कारण प्रारम्भ में ऐसा होगा, बाद में वह एक-दूसरे से पूछेंगे भी ।

[2] मुख का वर्णन इस लिए किया गया है कि मनुष्य के अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण एवं उत्तम अंग है, वरन् नरक की अग्नि तो पूरे शरीर को ही घेरे हुए होगी ।

[3] كَالِحٌ का अर्थ है होंठ सिकुड़ कर दाँत निकल आयें । होंठ दाँतों के वस्त्र के रूप में हैं, जब यह नरक की अग्नि से सिकुड़ तथा सिमट जायेंगे तो दाँत दिखायी देने लगेंगे, जिससे मनुष्य का रूप कुरूप तथा डरावना हो जायेगा ।

[4] स्वाद तथा आकांक्षा को जो मनुष्य पर प्रभावशाली रहते हैं, यहाँ दुर्भाग्य कहा गया है, क्योंकि इनका परिणाम स्थाई रूप से दुर्भाग्य पूर्ण होता है ।

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَٰلِمُونَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) हे मेरे प्रभु ! हमको यहाँ से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो नि:संदेह हम अत्याचारी हैं।

قَالَ ٱخْسَـُٔوا۟ فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿١٠٨﴾

(१०८) (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा धिक्कार है तुम पर यहीं पड़े रहो तथा मुझसे बात न करो।

إِنَّهُۥ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِى يَقُولُونَ رَبَّنَآ ءَامَنَّا فَٱغْفِرْ لَنَا وَٱرْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ ٱلرَّٰحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) मेरे भक्तों का एक गुट था जो निरन्तर यही कहता रहा कि हे मेरे प्रभु ! हम ईमान ला चुके हैं, तू हमें क्षमा कर दे तथा हम पर कृपा कर तू सभी कृपालुओं से अधिक कृपालु है।

فَٱتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰٓ أَنسَوْكُمْ ذِكْرِى وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) (परन्तु) तुम उनका उपहास ही उड़ाते रहे यहाँ तक कि (उनके पीछे) तुम मेरी याद भुला बैठे तथा तुम उनकी हँसी ही उड़ाते रहे।

إِنِّى جَزَيْتُهُمُ ٱلْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوٓا۟ أَنَّهُمْ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴿١١١﴾

(१११) मैंने आज उनके धैर्य (तथा संयम) का बदला दे दिया है, कि वे अपनी इच्छित आकाँक्षा को पहुँच चुके हैं।[1]

---

[1]संसार में ईमानवालों के लिए धैर्य एवं संयम की परीक्षा की एक घड़ी यह भी होती है कि जब वे धर्म तथा ईमान की बातों के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करते हैं तो धर्म से अनजान तथा ईमान से अनभिज्ञ लोग उनके उपहास तथा निन्दा का लक्ष्य बना लेते हैं। कितने ही कमज़ोर ईमान वाले हैं कि वह इन निन्दाओं के भय से अल्लाह के बहुत से आदेशों के अनुसार कर्म करने से बचते हैं। जैसे दाढ़ी है, स्त्रियों के पर्दे की बात है, विवाह में हिन्दू धर्म की रीति-रिवाजों से बचना है इत्यादि। सौभाग्यशाली हैं वह लोग जो किसी उपहास तथा धिक्कार की चिन्ता किये बिना अल्लाह तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करने से किसी अवसर पर भी मुख नहीं मोड़ते । ﴿وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ﴾ अल्लाह तआला क़ियामत में इसका श्रेष्ठतम बदला प्रदान करेगा तथा उन्हें सफलता प्रदान करेगा जैसाकि इस आयत से स्पष्ट है। اللهم اجعلنا منهم हे अल्लाह ! हमें उन्हीं में कर दे।

(११२) (अल्लाह तआला) पूछेगा कि तुम धरती पर वर्षों की गिनती से कितने रहे ?

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

(११३) (वे) कहेंगे एक दिन अथवा एक दिन से भी कम, गणना करने वालों से भी पूछ लीजिए ।[1]

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾

(११४) (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा वास्तविकता यह है कि तुम वहाँ बहुत कम रहे हो, काश ! इसको तुम पहले ही से जान लेते ।[2]

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

(११५) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हमने तुम्हें व्यर्थ ही पैदा किया है, तथा यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे ?

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

(११६) अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह सर्वोच्च है,[3] उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वही महिमावान अर्श का प्रभु है ।[4]

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

---

[1]इससे तात्पर्य फ़रिश्ते हैं,जो मनुष्य के कर्म तथा आयु लिखने पर नियुक्त हैं अथवा वह मनुष्य तात्पर्य है जो हिसाब-किताब में दक्षता रखते हैं। क़ियामत की भयानकता उनके मस्तिष्क से दुनिया की सुख-सुविधा को मिटा देगी तथा दुनिया का जीवन उन्हें ऐसा लगेगा जैसे दिन अथवा आधा दिन। इसलिए वह कहेंगे कि हम तो एक दिन अथवा उससे भी कम समय दुनिया में रहे। नि:संदेह तू फ़रिश्तों से अथवा गणितज्ञों से पूछ ले।

[2]इसका अर्थ है कि आख़िरत के स्थाई जीवन की तुलना में निश्चित रूप से दुनिया का जीवन अति लघु है। परन्तु इस बिन्दु को दुनिया में तुमने नहीं जाना। काश, तुम दुनिया की इस वास्तविकता से तथा दुनिया के अस्थाईत्व से सतर्क हो जाते तो आज तुम भी ईमानवालों की तरह सफल एवं सम्मानित होते।

[3]अर्थात वह इससे सर्वोपरि है कि वह तुम्हें निरूद्देश्य रूप से खेल के रूप में पैदा करे तथा तुम जो चाहो करो, तुमसे उसकी कोई पूछताछ न हो। बल्कि उसने तुम्हें एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है तथा वह है उसकी इबादत करना। इसीलिए आगे फ़रमाया कि वही पूजने योग्य है, उसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं।

[4]अर्श का विशेषण कृपा बताया क्योंकि वहाँ से कृपा तथा विभूतियों का अवतरण होता है।

(११७) तथा जो व्यक्ति अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को पुकारे जिसका उसके पास कोई प्रमाण नहीं तो उसका हिसाब उसके प्रभु के ऊपर ही है। नि:संदेह काफ़िर लोग मोक्ष से वंचित हैं।[1]

وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾

(११८) तथा कहो कि हे मेरे प्रभु ! तू क्षमा कर तथा कृपा कर तथा तू सभी कृपालुओं से उत्तम कृपा करने वाला है।

وَقُل رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

सूरतुन नूर-२४

سُورَةُ النُّورِ

सूर: नूर* मदीने में अवतरित हुई तथा इसकी चौंसठ आयतें तथा नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह अति कृपालु अति दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) यह है वह सूर: जो हमने अवतरित की है[2] तथा निर्धारित कर दी है तथा जिसमें हमने खुले आदेश उतारे हैं ताकि तुम याद रखो।

سُورَةٌ أَنزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि भलाई तथा सफलता आख़िरत में अल्लाह की यातना से बच जाना है, मात्र दुनिया के धन तथा सुविधाओं की अधिकता सफलता नहीं, यह तो दुनिया में काफ़िरों को भी प्राप्त है, परन्तु अल्लाह तआला उनसे भलाई को नकार रहा है, जिसका स्पष्ट अर्थ है कि मूलरूप से भलाई आख़िरत की भलाई है, जो ईमानवालों के भाग में आयेगी, न सांसारिक धन तथा साधन की अधिकता जो कि बिना भेद के ईमानवालों तथा काफ़िर सबको ही प्राप्त होती है।

**सूर: नूर, सूर: अहज़ाब* तथा *सूर: निसा* यह तीनों सूर: ऐसी हैं जिनमें स्त्रियों की विशेष समस्यायें तथा समाजिक जीवन के विषय में महत्वपूर्ण विस्तृत जानकारियों का वर्णन है।

[2]क़ुरआन करीम की सभी सूरतें अल्लाह की उतारी हुई हैं, परन्तु इस सूर: के विषय में जो यह कहा तो इससे इस सूर: में वर्णित आदेशों के महत्व को उजागर करना है।

ٱلزَّانِيَةُ وَٱلزَّانِى فَٱجْلِدُوا۟ كُلَّ وَٰحِدٍ مِّنْهُمَا مِا۟ئَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِى دِينِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۖ

(२) व्यभिचार करने वाले स्त्री-पुरूष में से प्रत्येक को सौ कोड़े लगाओ ।[1] उन पर अल्लाह के नियमों के अनुरूप दण्ड देते हुए तुम्हें कदापि तरस नहीं खानी चाहिए यदि तुम्हें अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान

---

[1]व्यभिचार का प्रारम्भिक दण्ड जो इस्लाम में अस्थाई रूप से बताया गया था, वह *सूरः निसा* की आयत संख्या १५ में गुज़र चुका है, उसमें कहा गया था कि जब तक इसके लिए कोई स्थाई दण्ड निर्धारति न कर लिया जाये, उन व्यभिचारी स्त्रियों को घरों में बन्द रखो । फिर जब *सूरः नूर* की यह आयत अवतरित हुई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने जो वादा किया था, उसके अनुसार व्यभिचारी पुरूष-स्त्री का स्थाई दण्ड निर्धारित कर दिया गया है वह तुम मुझसे सीख लो, तथा वह है कि अविवाहित पुरूष-स्त्री के लिए प्रत्येक को सौ-सौ कोड़े तथा विवाहित पुरूष-स्त्री को सौ-सौ कोड़े तथा पत्थरों से मारकर मार डालना । (सहीह मुस्लिम किताबुल हूदुद वाब हद्दि अज़्ज़िना, वस्सुनन) फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाहित पुरूष-स्त्री को व्यावहारिक रूप से पत्थरों से मार डालने का दण्ड दिया तथा सौ कोड़े (जो छोटा दण्ड है) बड़े दण्ड में सम्मिलित कर दिया तथा अब विवाहित स्त्री-पुरूष का दण्ड केवल पत्थरों से मारकर मार डालना ही है । रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात ख़ुल्फ़ाये राशदीन (महामहिम उत्तराधिकारी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा सहाबा (रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जो लोग ईमान के मार्ग पर रहे तथा अन्त भी ईमान पर हुआ हो ऐसे मुसलमानों को कहा जाता है) के समय में भी यही दण्ड दिया गया । तथा उनके पश्चात उम्मत के सभी ज्ञानी और फ़ुक़्हा भी इसी को मानने वाले थे और आज तक हैं, केवल ख़वारिज ने इस दण्ड को अस्वीकार किया है तथा उप-महाद्वीप में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो इस दण्ड को अस्वीकार करते हैं । तथा हदीस को अस्वीकार करने वालों ने भी इसे अस्वीकार किया है । इस अस्वीकृति का मूल आधार ही हदीस की अस्वीकृति पर है । क्योंकि पत्थरों से मारकर मार डालने का दण्ड अत्यन्त युक्तियुक्त हदीसों से सिद्ध है तथा उसको वर्णित करने वालों की संख्या भी इतनी अधिक है कि आलिमों ने इसे निरन्तर हदीस की श्रेणी में रखा है । इसलिए हदीस के प्रमाण तथा धर्म में उसका धार्मिक नियमों का श्रोत होने को जो व्यक्ति स्वीकार करता है वह पत्थरों से मार डालने को अस्वीकार नहीं कर सकता ।

وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝٢

हो ।[1] उनके दण्ड के समय मुसलमानों का एक गुट उपस्थित होना चाहिए ।[2]

الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝٣

(३) व्यभिचारी पुरूष सिवाय व्यभिचारिणी स्त्री अथवा मूर्तिपूजक स्त्री के अन्य से विवाह नहीं करता तथा व्यभिचारिणी स्त्री भी सिवाय व्यभिचारी पुरूष अथवा मूर्तिपूजक पुरूष के अतिरिक्त अन्य से विवाह नहीं करती । तथा ईमानवालों को यह निषेध (हराम) कर दिया गया ।[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि दयाभाव के कारण दण्ड देने से न रूक जाओ, वरन् प्राकृतिक रूप से दयाभाव का उत्पन्न होना ईमान के विपरीत नहीं, सारांशत: यह तो मनुष्य की प्राकृति में से है ।

[2]ताकि दण्ड का मूल उद्देश्य जो यह है कि लोग उससे शिक्षा ग्रहण करें, अत्याधिक विस्तृत रूप से लोग शिक्षा प्राप्त कर सकें । दुर्भाग्य से आजकल जनसमूह के समक्ष दण्ड देना मानवाधिकार के विरूद्ध कहा जा रहा है । यह पूर्ण रूप से मूर्खता, अल्लाह के आदेशों की अवहेलना तथा दूसरे शब्दों में अल्लाह से भी अधिक मनुष्यों के साथ सहानुभूति रखने वाला शुभचिन्तक बनना है । जबकि वास्तविकता यह है कि अल्लाह से अधिक सहानुभूति तथा दया किसी में नहीं है ।

[3]इसके भावार्थ में व्याख्याकारों में मतभेद है । कुछ कहते हैं कि यहाँ विवाह से तात्पर्य प्रचलित विवाह नहीं है बल्कि व्यभिचार के अर्थ में है तथा उद्देश्य व्यभिचार के दुष्परिणाम तथा दुष्कर्म को वर्णन करना है । अर्थ यह है कि कुकर्मी पुरूष अपनी इंद्रियों को अनुचित रूप से शान्ति करने के लिए व्यभिचारी स्त्री की ओर तथा उसी प्रकार कुकर्मी स्त्री कुकर्मी पुरूष की ओर आकर्षित होती है, ईमानवालों के लिए ऐसा करना अर्थात व्यभिचार निषेध (हराम) है । तथा मूर्तिपूजक स्त्री-पुरूष का वर्णन इसलिए कर दिया गया कि व्यभिचार भी मूर्तिपूजा के समतुल्य पाप है, जिस प्रकार मूर्तिपूजक अल्लाह को छोड़कर अन्य के निकट शीश नवाता है, उसी प्रकार व्यभिचारी पुरूष पत्नी को छोड़कर अथवा पत्नी अपने पति को छोड़कर अन्य लोगों से अपना मुँह काला कराती है । इस प्रकार मूर्तिपूजक तथा व्यभिचारी के मध्य एक विचित्र आन्तरिक समानता होती है । कुछ कहते हैं कि यह साधारण रीति के कारण है तथा अर्थ यह है कि साधारणतया कुकर्मी लोग विवाह के लिए अपने ही जैसे लोगों की ओर आकर्षित होते हैं । अत: व्यभिचारियों

(४) तथा जो लोग पवित्र स्त्री पर व्यभिचार का आक्षेप लगायें, फिर चार गवाह (साक्षी) प्रस्तुत न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ तथा कभी भी उनका साक्षी स्वीकार न करो। ये दुराचारी लोग हैं।[1]

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤﴾

(५) हाँ, जो लोग इसके पश्चात क्षमा माँग कर सुधार कर लें[2] तो अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला तथा दया करने वाला है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥﴾

की अधिकतर संख्या व्यभिचारियों के साथ विवाह करना पसन्द करती है तथा इसका उद्देश्य ईमानवालों को सतर्क करना है कि जिस प्रकार व्यभिचार अत्यन्त कुरूप तथा महापाप है, उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना भी मना तथा निषेध (हराम) है। इमाम शौकानी ने इस भावार्थ को अति उत्तम बताया है तथा हदीसों में इसके अवतरित होने के जो भी कारण वर्णित है उससे भी इसकी पुष्टि होती है कि कुछ सहाबा ने व्यभिचारी स्त्रियों से विवाह करने की आज्ञा चाही तो उस पर यह आयत अवतरित हुई, अर्थात उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया। इसी से भाव निकलते हुए आलिमों ने कहा है कि एक पुरूष ने जिस स्त्री से अथवा स्त्री ने जिस पुरूष से कुकर्म किया हो उनका आपस में विवाह मान्य नहीं। यदि वे शुद्ध हृदय से क्षमा माँग लें तो फिर उनके मध्य विवाह मान्य है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[1]इसमें قذف (आक्षेप लगाने) का दण्ड वर्णित किया गया है कि जो व्यक्ति किसी पवित्र स्त्री अथवा पुरूष पर व्यभिचार का आक्षेप लगाये (उसी प्रकार जो स्त्री किसी पवित्र पुरूष अथवा स्त्री पर व्यभिचार का आक्षेप लगाये) तथा प्रमाण स्वरूप चार साक्षी प्रस्तुत न कर सके, तो उनके लिए तीन आदेश वर्णित किये गये हैं (१) उन्हे अस्सी कोड़े लगाये जायें, (२) उनकी गवाही कभी स्वीकार न की जाये तथा (३) वह अल्लाह के समक्ष तथा लोगों के समक्ष दुराचारी हैं।

[2]क्षमा माँग लेने से तो कोड़ों के दण्ड से छूट नहीं मिलेगी, वह पश्चाताप कर लें अथवा विनती करें, यह दण्ड तो भुगतना ही पड़ेगा। परन्तु दूसरी दो बातें, गवाही से वंचित तथा दुराचारी होना उसमें मतभेद है। कुछ आलिम उसको दुराचारी होने से छूट देते हैं अर्थात क्षमा माँग लेने के पश्चात वह दुराचारी नहीं रहेगा। तथा कुछ व्याख्याकार दोनों वाक्यों को इसमें सम्मिलित मानते हैं। अर्थात क्षमा माँगने के पश्चात वह गवाही देने योग्य हो जायेगा तथा दुराचारी भी न होगा। इमाम शौकानी ने इसी दूसरे मत को

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ ۙ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٦﴾

(६) तथा जो लोग अपनी पत्नियों पर व्यभिचार का आरोप लगायें तथा उनका साक्षी सिवाय उनके अन्य कोई न हो तो ऐसे लोगों में से प्रत्येक का प्रमाण यह है कि चार बार अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहें कि वह सत्यवादियों में से हैं।

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٧﴾

(७) तथा पाँचवी बार यह की उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह झूठों में से हो।[1]

وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَن تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ ۙ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٨﴾

(८) तथा उस (स्त्री) से दण्ड इस प्रकार समाप्त किया जा सकता है कि वह चार बार अल्लाह की सौगन्ध खा कर कहे कि निःसंदेह उसका पति झूठ बोलने वालों में से है।

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا

(९) तथा पाँचवी बार कहे कि उस पर अल्लाह का क्रोध (धिक्कार) हो यदि उसका

अधिमान दिया तथा أبدًا का अर्थ वर्णन किया है कि ما دام قاذفًا अर्थात जब तक वह आक्षेप लगाने पर स्थिर रहेगा। जिस प्रकार कहा जाता है कि काफ़िर की गवाही कभी स्वीकृत नहीं, तो यहाँ कभी का अर्थ यही होगा कि जब तक वह काफ़िर है।

[1]इसमें لعان की समस्या का वर्णन है जिसका अर्थ यह है कि किसी पति ने अपनी पत्नी को अपनी आँखों से किसी अन्य के साथ कुकर्म करते हुए देखा, जिसका वह तो प्रत्यक्षदर्शी है, परन्तु चूँकि व्यभिचार के नियम को सत्यापित करने के लिए चार गवाहों की आवश्यकता है। इसलिए जब तक वह अपने साथ अन्य तीन गवाह न प्रस्तुत करे, उसकी पत्नी पर व्यभिचार का नियम लागू नहीं हो सकता। परन्तु अपनी आँखों से देख लेने के पश्चात ऐसी दुष्चरित्र पत्नी को सहन करना भी असम्भव है। धार्मिक नियम ने इसका यह हल (समाधान) प्रस्तुत किया है कि यह व्यक्ति न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष चार बार अल्लाह की सौगन्ध खाकर यह कहेगा कि वह अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाने में सच्चा है अथवा यह बालक अथवा गर्भ उसका नहीं है। तथा पाँचवी बार कहेगा कि यदि वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की धिक्कार।

पति सत्यवादियों में से हो ।[1]

إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩

(१०) तथा यदि अल्लाह (तआला) की कृपा तथा दया तुम पर न होती[2] (तो तुम पर दुख उतरते) तथा अल्लाह (तआला) क्षमा को स्वीकार करने वाला ज्ञानी है ।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

(११) जो लोग यह बहुत बड़ा आक्षेप खड़ा कर लाये हैं ।[3] यह भी तुम में से एक गुट

إِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ

---

[1]अर्थात यदि पति के उत्तर में पत्नी चार बार सौगन्ध खाकर यह कह दे कि वह झूठा है तथा पांचवीं बार कहे कि यदि उसका पति सच्चा है (तथा मैं झूठी हूँ) तो मुझ पर अल्लाह का प्रकोप हो । तो इस अवस्था में वह व्यभिचार के दण्ड से बच जायेगी । उसके पश्चात उन दोनों के मध्य सदा के लिए वियोग (जुदाई) हो जायेगी । इसे لعان इसलिए कहते हैं कि इसमें दोनों ही अपने आप को झूठे होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में ऐसी कुछ घटनायें घटित हुईं जिनका वर्णन हदीसों में विद्यमान है, वही घटनायें इस आयत के अवतरित होने का कारण बनीं ।

[2]इसका उत्तर लुप्त है, तो तुम में से झूठे पर तुरन्त अल्लाह का प्रकोप अवतरित हो जाता, परन्तु चूँकि वह क्षमाशील तथा दूरदर्शी भी है, इसलिए एक तो उसने पर्दा डाल दिया ताकि कोई उसके पश्चात शुद्ध हृदय से क्षमा माँग ले तो वह उसे अपने दया की छाया में लगा लेगा तथा दूरदर्शी भी है कि उसने لعان जैसी समस्या का वर्णन करके स्वाभिमानी पतियों के लिए अति उचित तथा सरल नियम प्रस्तुत कर दिया है ।

[3] إِفْكٌ से तात्पर्य वह आरोप की घटना है जिसमें द्वयवादियों ने आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) के सतीत्व एवं सम्मान को कलंकित करना चाहा था । परन्तु अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) के ऊपर लगे आक्षेप का खण्डन करने के लिए आयत अवतरित कर के उनके पवित्र सतीत्व तथा सम्मान को और अधिक स्पष्ट कर दिया । संक्षेप में यह घटना इस प्रकार है, पर्दे के आदेश के पश्चात बनी मुस्तलीक़ के युद्ध (मरीसीअ) से वापसी पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा ने मदीने के निकट एक स्थान पर विश्राम (पड़ाव) किया, प्रात: काल जब वहाँ से प्रस्थान किया तो आदरणीय आयशा की डोली भी जो खाली थी, यात्रियों ने यह समझकर ऊँट पर रख दी कि उम्मुल मोमनीन (मुसलमानों की माता) उसके अन्दर ही होंगी, तथा वहाँ से प्रस्थान कर दिया जबकि आदरणीय आयेशा अपनी माला की खोज में बाहर गई थीं, जब वापस आयीं तो देखा कि यात्री तो चले गये । फिर यह सोंचकर वहीं

है।[1] तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तो तुम्हारे पक्ष में श्रेष्ठ है।[2] हाँ, उनमें से प्रत्येक पर उतना पाप है, जितना उसने कमाया है, तथा उनमें से जिसने उसके बहुत

مِّنكُمْ ۚ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم ۖ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ

लेटी रहीं कि जब उन्हें मेरी अनुपस्थिति का ज्ञान होगा तो मेरी खोज में वापस आयेंगे। थोड़ी देर में सफ़वान बिन मोअत्तल सुलमी आ गये, जिनका कार्य यही था कि यात्रियों की रह जाने वाली वस्तुयें संभाल लें, उन्होंने आदरणीया आयशा को पर्दे के आदेश से पूर्व देखा था उन्हें देखते ही إنا لله و إنا إليه راجعون पढ़ा तथा समझ गये कि यात्री त्रुटि से अथवा अज्ञानवश आदरणीया माता को यहीं छोड़कर आगे चले गये। अत: उन्होंने उन्हें अपने ऊंट पर बैठाया तथा स्वयं ऊंट की नकेल पकड़कर पैदल चलकर यात्रियों से जा मिले। द्वयवादियों ने जब आदरणीया आयशा को इस प्रकार बाद में अकेले आदरणीय सफ़वान के साथ आते देखा तो उस अवसर को अति उचित जाना तथा द्वयवादियों के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय ने कहा कि यह एकान्त तथा अलगाव अकारण ही नहीं तथा इस प्रकार उन्होंने आदरणीय आयशा को आदरणीय सफ़वान के साथ कलंकित कर दिया जबकि दोनों ही इस बात से बिल्कुल (सर्वथा) अनभिज्ञ (अनजान) थे। कुछ शुद्ध मुसलमान भी षड़यन्त्रकारियों के बहकावे में आ गये। जैसे आदरणीय हस्सान, मिस्तह बिन असासा तथा हमना बिनत जहश (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) (इस घटना का पूर्ण विवरण हदीस में आया है) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरे एक महीने जब तक अल्लाह तआला की ओर से निर्दोषता (सफाई नहीं उतरी) अत्यन्त व्याकुल रहे तथा आदरणीया आयशा अज्ञान में अपने स्थान पर व्याकुल। इन आयतों में अल्लाह तआला ने इसी घटना को संक्षेप में परन्तु व्यापक रूप से वर्णन किया है। إفك का अर्थ है किसी वस्तु को उल्टा देना। इस घटना में भी मुनाफ़िकों (मौखिक मुसलमानों) ने मामले को उल्टा दिया था अर्थात आदरणीय आयशा (رضي الله عنها) तो प्रशंसा की पात्रा थीं, उच्च वंशीय, तथा स्वच्छ चरित्र की स्वामिनी थी न कि कलंकित करने की। परन्तु अत्याचारियों ने इस महा चरित्रवान (साकार सतीत्व) को इसके विपरीत आक्षेप तथा आरोप का लक्ष्य बनाया।

[1]एक गुट अथवा समूह को عُصبة कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे की शक्ति तथा सहायता का कारण होते हैं।

[2]क्योंकि इससे एक तो तुम्हें दुख तथा कठिनाईयों के कारण महा प्रत्युपकार प्राप्त होगा दूसरे यह कि आकाश से आदरणीय आयशा के पक्ष में आयत अवतरित होने से उनकी महानता तथा उनके परिवार का सम्मान तथा महत्व स्पष्ट हो गया। इसके अतिरिक्त ईमानवालों के लिए इसमें शिक्षा ग्रहण करने के अन्य पक्ष हैं।

كِبْرَهُۥ مِنْهُمْ لَهُۥ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑪

बड़े भाग को पूरा किया है. उसके लिए यातना भी बहुत बड़ी है ।[1]

لَّوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ ٱلْمُؤْمِنُونَ
وَٱلْمُؤْمِنَٰتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا۟
هَٰذَآ إِفْكٌ مُّبِينٌ ⑫

(१२) उसे सुनते ही मुसलमान पुरूषों तथा स्त्रियों ने अपने पक्ष में अच्छा विचार क्यों नहीं किया तथा क्यों न कह दिया यह तो खुला आरोप है ।[2]

لَّوْلَا جَآءُو عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ
شُهَدَآءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا۟ بِٱلشُّهَدَآءِ
فَأُو۟لَٰٓئِكَ عِندَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْكَٰذِبُونَ ⑬

(१३) वह इस पर चार साक्षी क्यो नहीं लाये ? तथा जब साक्षी नहीं लाये तो यह आक्षेप लगाने वाले लोग नि:संदेह अल्लाह के निकट केवल झूठे हैं ।

وَلَوْلَا فَضْلُ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُۥ فِى
ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِى مَآ
أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑭

(१४) तथा यदि तुम पर अल्लाह (तआला) की कृपा तथा दया दुनिया तथा आख़िरत में न होती तो नि:संदेह तुमने जिस बात के चर्चे प्रारम्भ कर रखे थे उस विषय में तुम्हें बहुत बड़ा प्रकोप पहुँचता ।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُۥ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ
بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِۦ عِلْمٌ
وَتَحْسَبُونَهُۥ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ ٱللَّهِ
عَظِيمٌ ⑮

(१५) जबकि तुम अपने मुख से इसकी चर्चा परस्पर करने लगे तथा अपने मुख से वह बात निकालने लगे जिसकी तुम को कदापि सूचना नहीं थी, यद्यपि तुम उसे सरल बात समझाते रहे, परन्तु अल्लाह के निकट वह बहुत बड़ी बात थी ।

---

[1]इससे तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबैय मुनाफ़िकों का सरदार है जो इस षड़यन्त्र का मुखिया था ।

[2]यहाँ से प्रशिक्षण का वह पक्ष प्रकट हो रहा है जो इस घटना में लुप्त है । इनमें सर्वप्रथम बात यह है कि ईमानवाले एक प्राण की भाँति हैं, जब आदरणीया आयशा पर आरोप लगाया गया तो तुमने अपने ऊपर समझकर इसका खण्डन क्यों नहीं किया तथा उसे खुला आक्षेप क्यों नहीं कह दिया ?

(१६) तथा तुमने बात सुनते ही क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुख से निकालनी भी शोभा नहीं देती ? हे अल्लाह ! तू पवित्र है, यह तो बहुत बड़ा आक्षेप है ।[1]

وَلَوۡلَآ إِذۡ سَمِعۡتُمُوهُ قُلۡتُم مَّا يَكُونُ لَنَآ أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبۡحَٰنَكَ هَٰذَا بُهۡتَٰنٌ عَظِيمٌ ⑯

---

[1]दूसरी बात अल्लाह तआला ने ईमानवालों को यह बतायी कि इस आक्षेप पर उन्होंने एक भी गवाह प्रस्तुत नहीं किया जबकि इसके लिए चार गवाहों की आवश्यकता थी। इसके उपरान्त तुमने उन दोषारोपण करने वालों को झूठा नहीं कहा। यही कारण है कि इन आयतों के अवतरित होने के पश्चात आदरणीय हस्सान, मिस्तह, तथा हमना बिन्ते जहश को मिथ्यारोपण का दण्ड दिया गया (मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ ३०, तिर्मिजी संख्या ३१८१, अबू दाऊद संख्या ४४७४, इब्ने माजा संख्या २५६७) अब्दुल्लाह बिन उबैय को इसलिए दण्ड नहीं दिया गया कि उसके लिए आख़िरत की घोर यातना को ही पर्याप्त समझ लिया गया तथा ईमानवालों को दण्ड देकर संसार ही में पवित्र कर दिया गया । दूसरे उसके पीछे एक पूरा जत्था था, उसको दण्ड देने में ऐसे ख़तरे थे कि जिनसे निपटना उस समय मुसलमानों के लिए कठिन था, इसलिए कारणवश उसे दण्ड नहीं दिया गया। (फ़तहुल क़दीर)

तीसरी बात यह बतायी गयी है कि अल्लाह की कृपा तथा उपकार तुम पर न होता, तो तुम्हारा यह व्यवहार कि बिना खोज किये अफ़वाह (किव्दन्ती) को आगे फैलाने लगे महा-प्रकोप का कारण था, इसका अर्थ यह है कि अफ़वाह उत्पन्न करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना भी महा अपराध है, जिसके कारण मानव अति कठोर यातना का अधिकारी हो सकता है।

चौथी बात यह की सीधे मामला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी तथा उनके मान-मर्यादा का था, परन्तु तुमने उसको कोई महत्व नहीं दिया, तथा उसे तुच्छ समझा । इससे यह समझाने का उद्देश्य है कि मात्र सतीत्वहनन ही बड़ा अपराध नहीं है जिसका दण्ड सौ कोड़े अथवा पत्थरों से मारकर हत कर डालना है, बल्कि किसी के चरित्र तथा मान-सम्मान पर आक्रामण करना तथा किसी सम्मानित परिवार के अपमान तथा उपहास का प्रबन्ध करना भी अल्लाह के निकट महापाप है। इसे तुच्छ न समझो। इसीलिए आगे फिर विशेष बल देते हुए कहा कि तुमने सुनते ही क्यों न कहा कि हमें ऐसी बातें मुख से निकालने योग्य भी नहीं। यह निःसंदेह महा लाँछन है। इसीलिए इमाम मालिक फ़रमाते हैं कि जो नाम के मुसलमान आदरणीया आयशा पर आक्षेप आरोपित करे वह काफ़िर है क्योंकि वह अल्लाह तथा क़ुरआन को झुठलाता है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

(१७) अल्लाह (तआला) तुम्हें चेतावनी देता है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, यदि तुम सच्चे ईमानवाले हो।

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

(१८) तथा अल्लाह (तआला) तुम्हारे समक्ष अपनी आयतें वर्णन कर रहा है, तथा अल्लाह (तआला) ज्ञाता तथा हिक्मत वाला है।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

(१९) जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने की कामना रखते हैं, उनके लिए दुनियाँ तथा आख़िरत में दुखदायी यातनायें हैं,[1] तथा अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है तथा तुम कुछ नहीं जानते।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

(२०) तथा यदि तुम पर अल्लाह (तआला) की दया तथा कृपा न होती, तथा यह भी कि

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ

[1] فاحشة का अर्थ है निर्लज्जा तथा क़ुरआन ने व्यभिचार को निर्लज्जा कहा है (बनी इस्राईल) तथा यहाँ व्यभिचार के एक झूठे समाचार के प्रचार को भी अल्लाह तआला ने निर्लज्जा कहा है तथा इसे दुनिया तथा आख़िरत के दुखदायी यातनाओं का कारण बताया है जिससे असभ्यता के विषय में इस्लाम की प्रकृति तथा अल्लाह तआला की इच्छा का अनुमान होता है कि मात्र असभ्यता की झूठी ख़बर का प्रकाशन अल्लाह के समक्ष कितना बड़ा अपराध है, तो जो लोग रात-दिन एक इस्लामी समाज में समाचार पत्रों, रेडियो, टी॰वी॰ तथा फ़िल्मी ड्रामों द्वारा असभ्यता का प्रचार कर रहे हैं तथा घर-घर उसे पहुँचा रहे हैं अल्लाह के यहाँ ये लोग कितने बड़े अपराधी होंगे? तथा उन कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मचारी किस प्रकार असभ्यता के प्रचार के अपराध से छुटकारा पायेंगे? इसी प्रकार अपने घर में टी॰वी॰ लाकर रखने वाले, जिससे उनकी आगामी पीढ़ी में असभ्यता फैला रही है, वह भी असभ्यता के प्रचार के अपराधी क्यों नहीं होंगे? तथा यही मामला निर्लज्ज दैनिक समाचार पत्रों का है कि उनका भी घरों के अन्दर आना असभ्यता के प्रचार का कारण है, यह भी अल्लाह के समक्ष अपराध हो सकता है। काश, मुसलमान अपने इन कर्तव्यों का आभास करें तथा इस असभ्यता के तूफ़ान (प्रचन्डता) को रोकने के लिए अपनी शक्ति भर प्रयत्न करें।

وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

अल्लाह (तआला) अति प्रेम करने वाला दयालु है (तो तुम पर प्रकोप आ जाता)।[1]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَىٰ مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

(२१) हे ईमानवालो ! शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। जो व्यक्ति शैतान के पदचिन्हों पर चले, तो वह असभ्य तथा बुरे कार्यों का ही आदेश देगा। तथा यदि अल्लाह (तआला) की दया एवं कृपा तुम पर न होती, तो तुममें से कोई भी कभी पवित्र एवं शुद्ध न होता। परन्तु अल्लाह (तआला) जिसे पवित्र करना चाहे कर देता है।[2] तथा अल्लाह (तआला) सब सुनने वाला तथा सब जानने वाला है।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنكُمْ وَالسَّعَةِ أَن يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ

(२२) तथा तुममें से जो भी महान तथा उदार हैं, उन्हें अपने निकट सम्बन्धियों तथा निर्धनों एवं शरणार्थियों को अल्लाह के मार्ग में देने से सौगन्ध न खा लेनी चाहिए, बल्कि क्षमा कर देना चाहिए तथा जाने देना चाहिए। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह (तआला) तुम्हारी

---

[1]उत्तर लोप है, तो फिर अल्लाह का प्रकोप तुम्हें अपनी पकड़ में ले लेता। यह मात्र उसकी कृपा तथा उसका प्रेमभाव एवं दया है कि उसने तुम्हारे इस महापाप को क्षमा कर दिया।

[2]इस स्थान पर शैतान के अनुसरण से रोकने के पश्चात फ़रमाया कि यदि उसकी कृपा तथा दया न होती तो तुममें से कोई भी पवित्र एवं स्वच्छ न होता, इसका अभिप्राय यह जान पड़ता है कि जो लोग उक्त घटना आरोप लगाने में सम्मिलित होने से बच गये, यह मात्र अल्लाह की कृपा तथा दया है जो उन पर हुई, वरन् वे भी इसी धारा में बह जाते जिसमें कुछ मुसलमान बह गये थे। इसलिए शैतान के छल तथा कपट से बचने के लिए एक तो हर समय अल्लाह से सहायता माँगते तथा उसकी ओर आकर्षित होते रहो तथा दूसरे जो लोग अपनी इंद्रियों की कमज़ोरी के कारण शैतान के छल तथा कपट का शिकार हो गये हैं उनको अधिक धिक्कार का लक्ष्य न बनाओ। बल्कि शुभचिन्तक के रूप में उनके सुधार का प्रयास करो।

त्रुटियों को क्षमा कर दे ?[1] अल्लाह (तआला) त्रुटियों को क्षमा करने वाला कृपालु है।

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۲﴾

(२३) जो लोग सत्वन्ति भोली-भाली ईमान-वाली स्त्रियों पर आरोप लगाते हैं वे दुनिया तथा आख़िरत में धिक्कारे जाने वाले लोग हैं तथा उनके लिए अत्यन्त कठोर यातना है।[2]

اِنَّ الَّذِیْنَ یَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۲۳﴾

---

[1]आदरणीय मिस्तह जो आक्षेप की घटना में लिप्त थे निर्धन मुहाजिरीन में से थे, सम्बन्ध में आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक के मौसेरे भाई थे, इसलिए अबू बक्र उनके संरक्षक तथा जीवनयापन के उत्तरदायी थे, जब यह भी आदरणीया आयशा के विरूद्ध षड़यन्त्र में सम्मिलित हो गये, तो अबू बक्र सिद्दीक़ को अत्यन्त दुख पहुँचा, जो एक प्राकृतिक बात थी। अत: सफाई की आयत अवतरित होने के पश्चात क्रोध में उन्होंने सौगन्ध खा ली कि वह भविष्य में मिस्तह को कोई लाभ नहीं पहुँचायेंगे। अबू बक्र की यह सौगन्ध जो यद्यपि मानव प्रकृति के अनुकूल ही थी, परन्तु सिद्दीक़ आचरण उससे उच्च होने की माँग कर रहा था, अल्लाह तआला को अच्छा नहीं लगा तथा यह आयत अवतरित की, जिसमें अत्यन्त प्रेम से उनके इस त्वरित मानवीय प्रगति पर उन्हें चेतावनी दी कि तुम से भी त्रुटियाँ होती रहती हैं तथा तुम चाहते रहते हो कि अल्लाह तआला उसे क्षमा करता रहे। तो फिर तुम भी दूसरों के साथ उसी प्रकार क्षमा तथा टालने का मामला क्यों नहीं करते ? क्या तुमको प्रिय नहीं कि अल्लाह तआला तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर दे ? यह वर्णन की विधि इतनी प्रभावशाली थी कि उसे सुनते ही अबू बक्र सिद्दीक सहसा पुकार उठे "क्यों नहीं हे हमारे प्रभु ! हम अवश्य यह चाहते हैं कि तू हमें क्षमा कर दे।" उसके पश्चात उन्होंने अपनी सौगन्ध का प्रायश्चित अदा करके पूर्ववत: मिस्तह की धन से सहायता करनी प्रारम्भ कर दी। (फ़तहुल क़दीर, इब्ने कसीर)

[2]कुछ व्याख्याकारों ने इस आयत को आदरणीया आयशा तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्य पवित्र पत्नियों (رضي الله عنهن) के साथ विशेष रूप से सम्बन्धित कहा है कि इस आयत में विशेषरूप से उन पर आक्षेप लगाने के दण्ड का वर्णन किया गया है तथा वह यह है कि उनके लिए क्षमा नहीं है। तथा कुछ व्याख्याकारों ने इसे जनसामान्य के लिए ही रखा है तथा उस में वही आरोप लगाने का दण्ड वर्णन किया गया है जो पहले गुज़र चुका है। यदि आक्षेप लगाने वाला मुसलमान है तो धिक्कार का अर्थ होगा कि वह दण्ड के योग्य है तथा मुसलमानों के लिए घृणा तथा अलगाव का अधिकारी है। तथा यदि काफ़िर है तो भाव स्पष्ट ही है कि वह दुनिया तथा आख़िरत में धिक्कारा जाने वाला अर्थात अल्लाह की कृपा से वंचित है।

(२४) जबकि उनके समक्ष उनकी जीभ तथा उनके हाथ-पैर उनके कर्मों की गवाही देंगे ।[1]

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

(२५) उस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पूरा-पूरा बदला सत्य एवं न्याय के साथ प्रदान करेगा तथा वे जान लेंगे कि अल्लाह (तआला) ही सत्य है, वही प्रकट करने वाला है ।

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

(२६) कुकर्मी स्त्रियाँ कुकर्मी पुरूषों के योग्य हैं तथा कुकर्मी पुरूष कुकर्मी स्त्रियों के योग्य हैं तथा पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरूषों के योग्य हैं [2] तथा पवित्र पुरूष पवित्र स्त्रियों के योग्य हैं । ऐसे पवित्र लोगों के विषय में जो कुछ बकवास ये (आक्षेप धरने वाले) कर रहे हैं वह उनसे निर्दोष हैं, उनके लिए मोक्ष है तथा सम्मान पूर्वक जीविका है ।[3]

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

(२७) हे ईमानवालो ! अपने घरों के अतिरिक्त अन्य घरों में न जाओ जब तक कि आज्ञा न

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا

[1]जैसाकि क़ुरआन करीम में अन्य स्थानों पर भी तथा हदीसों में भी यह विषय वर्णन किया गया है ।

[2] इसका एक भावार्थ तो यही वर्णन किया गया है जो अनुवाद से स्पष्ट है । इस स्थिति में यह ﴿الزَّانِي لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً﴾ के समानार्थी आयत होगी, कुकर्मी स्त्री तथा कुकर्मी पुरुष से व्यभिचारी स्त्री तथा व्याभिचारी पुरूष तथा طيبات तथा طيبون से तात्पर्य पवित्र स्त्रियाँ तथा पवित्र पुरूष होंगे । दूसरे अर्थों में अभ्रद बातें अभद्र पुरूषों के लिए तथा अभद्र पुरूष अभद्र बातों के लिए हैं तथा पवित्र बातें पवित्र पुरूषों के लिए तथा पवित्र पुरूष पवित्र बातों के लिए हैं तथा अभिप्राय यह होगा कि अभद्र बातें वही पुरूष-महिलायें करती हैं जो अभद्र होती हैं तथा पवित्र बातें करना पवित्र पुरूषों तथा महिलाओं का व्यवहार है । इसमें संकेत इस बात की ओर है कि आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) पर आक्षेप आरोपित करने वाले अपवित्र तथा अभद्र तथा उनसे उसको निर्दोष मानने वाले पवित्र हैं ।

[3]इससे तात्पर्य स्वर्ग की वह सुख-सुविधा है जो ईमानवालों को प्राप्त होगी ।

ले लो, तथा वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो[1] यही तुम्हारे लिए श्रेष्ठतम है ताकि तुम शिक्षा प्राप्त करो ।[2]

غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَأْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝

(२८) यदि वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर आज्ञा मिले बिना अन्दर न जाओ । तथा

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا

---

[1]पूर्व की आयतों में व्यभिचार तथा उनके दण्डों का वर्णन हुआ, अब अल्लाह तआला गृह प्रवेश के नियमों का वर्णन कर रहा है ताकि स्त्री-पुरूष मिश्रण न हो जो प्राय: व्यभिचार तथा आरोप का कारण बनता है "استيناس" का अर्थ है, जानकारी करना, अर्थात जब तक तुम्हें यह जानकारी न हो जाये कि अन्दर कौन है तथा उसने तुम्हें अन्दर प्रवेश करने की अनुमति दे दी है, उस समय तक प्रवेश न करो । कुछ व्याख्याकारों ने تستأنسوا का अर्थ تستأذنوا किया है जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है । आयत में प्रवेश की आज्ञा माँगने का वर्णन पहले तत्पश्चात सलाम करने का वर्णन है । परन्तु हदीस से विदित होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले सलाम करते फिर अन्दर प्रवेश करने की आज्ञा माँगते । इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार था कि तीन बार आज्ञा माँगते यदि कोई उत्तर न मिलता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस लौट आते तथा यह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार था कि आज्ञा माँगते समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वार के दायीं अथवा बायीं ओर खड़े होते, ताकि एकदम सामना न हो जिससे बेपर्दगी होने की सम्भावना रहती है । (देखिये सहीह बुख़ारी किताबुल इस्तीज़ान, बाबुल तस्लीम वल इस्तीज़ान सलासन, मुसनद अहमद भाग ३ पृष्ठ १३८, अबू दाऊद किताबुल अदब, बाब कम मर्रतन योसल्लिमु रजुलो फ़िल इस्तीज़ाने) इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने द्वार पर खड़े होकर अन्दर की ओर झाँकने से भी कड़ाई से मना किया है, यहाँ तक कि यदि कोई व्यक्ति झाँकने वाले की आँख भी फोड़ दे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस पर कोई पाप नहीं । (अल बुख़ारी किताबुल दियात बाब मन इत्तलअ फ़ी बैते कौमिन फ़फ़क़उ ऐनहु फला दियत लहू, मुस्लिम किताबुल आदाब, बाब तहरीमिन नज़र फी बैत ग़ैरिही) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात को भी अप्रिय कहा कि जब अन्दर से गृह स्वामी पूछे कौन है ? तो उसके उत्तर में "मैं-मैं" कहा जाये । इसका अर्थ यह है कि नाम लेकर अपना परिचय कराये । (सहीह बुख़ारी किताबुल इस्तीज़ान बाबुन इज़ाक़ाल मन ज़ा ? क़ाल अना, तथा मुस्लिम किताबुल आदाब बाब कराहियत कौलिल मुस्ताजिने अना इज़ाक़ील मन हाज़ा ? तथा अबू दाऊद किताबुल अदब)

[2]अर्थात कर्म करो । अर्थ यह है कि आज्ञा प्राप्त करो तथा सलाम करने के पश्चात गृह में प्रवेश करो, दोनों के लिए सहसा प्रवेश करने से उत्तम है ।

فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا ۖ هُوَ أَزْكٰى لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

यदि तुम से लौट जाने को कहा जाये, तो तुम लौट ही जाओ, यही बात तुम्हारे लिए सुथराई है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) भली-भाँति जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

(२९) हाँ, जिनमें लोग न रहते हों ऐसे घरों में जहाँ तुम्हारा कोई लाभ अथवा सामान हो, जाने में कोई पाप नहीं,[1] तुम जो कुछ भी प्रकट करते हो तथा जो छुपाते हो अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है।[2]

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذٰلِكَ أَزْكٰى لَهُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) मुसलमान पुरूषों से कहो कि अपनी दृष्टि नीची रखें,[3] तथा अपने गुप्तांग की सुरक्षा रखें।[4] यही उनके लिए पवित्रता है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (तआला) सबसे अवगत है।

---

[1]इससे तात्पर्य कौन से घर हैं, जिनमें बिना आज्ञा प्राप्त किये प्रवेश करने की आज्ञा प्रदान की जा रही है। कुछ विद्वान कहते हैं कि इससे तात्पर्य वे घर हैं जो विशेषरूप से अतिथियों के लिए अलग तैयार किये गये हों, उनमें गृह स्वामी से प्रथम बार आज्ञा लेना ही पर्याप्त है। कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य सराय (धर्मशाला) है, जो यात्रियों के लिए होता है अथवा व्यापारिक घर हैं مَتَاعٌ का अर्थ है लाभकारी, अर्थात जिनमें तुम्हारा लाभ हो।

[2]इसमें उन लोगों के लिए चेतावनी है जो अन्य लोगों के घरों में प्रवेश करते समय वर्णित नियमों का पालन करने पर ध्यान नहीं देते।

[3]जब किसी के घर में प्रवेश करने के लिए आज्ञा लेने को आवश्यक बताया गया, तो उसके साथ ही आँखों को झुकी रखने अथवा बन्द रखने का आदेश दे दिया, ताकि आज्ञा माँगने वाला भी विशेष रूप से अपने नेत्रों पर नियन्त्रण रखे।

[4]अर्थात अनुचित प्रयोग से इसे बचायें अथवा इन्हें इस प्रकार छिपाकर रखें कि इन पर किसी की दृष्टि न पड़े, उसके ये दोनों भावार्थ ठीक हैं क्योंकि दोनों ही अभिप्राय हैं। इसके अतिरिक्त दृष्टि की सुरक्षा का प्रथम वर्णन है क्योंकि इसमें असावधानी ही गुप्तांग से असावधानी का कारण बनता है।

(३१) तथा मुसलमान स्त्रियों से कहो कि वे भी अपनी दृष्टि नीची रखें तथा अपने सतीत्व की रक्षा करें।[1] तथा अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें[2] सिवाय उस के जो प्रकट है।[3] तथा अपने गरेबान पर अपनी ओढ़नियों को पूर्णरूप से फैलाये रहें[4] तथा अपनी शोभा का

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَٰرِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ

---

[1]महिलायें भी यद्यपि आँखें नीची रखने तथा गुप्तांगों की सुरक्षा के प्रथम आदेश में सम्मिलित थीं जो सभी ईमानवालों को दिया गया है तथा ईमानवालों में ईमानवाली महिलायें भी सामान्य रूप से सम्मिलित होती हैं। परन्तु इस समस्या के महत्व के अनुरूप इसे विशेष रूप से महिलाओं के लिए भी पुन: वही आदेश दिया जा रहा है जिसका उद्देश्य बलपूर्वक कहना है, कुछ आलिमों ने इससे भावार्थ निकालते हुए कहा है कि जिस प्रकार से पुरूषों के लिए महिलाओं को देखना निषेध है उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी पुरूषों को देखना कदापि निषेध है। तथा कुछ ने उस हदीस से भावार्थ निकालते हुए जिसमें आदरणीया आयशा का ईथोपियनस का खेल देखने का वर्णन है (सहीह बुख़ारी किताबुस सलात, बाबु असहाबिल हेराब फ़िल मस्जिद) बिना काम भावना के पुरूषों की ओर महिलाओं को देखने की आज्ञा दी है।

[2]शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण है जो महिलायें अपनी सुन्दरता एवं सौन्दर्य में निखार लाने के लिए धारण करती हैं जिसको अपने पति के लिए करने पर बल दिया गया है। जब वस्त्र तथा आभूषण का प्रदर्शन अन्य पुरूषों के समक्ष महिलाओं के लिए निषेध है तो शरीर नग्न तथा प्रदर्शित करने की आज्ञा इस्लाम में कब हो सकती है ? यह तो अत्यधिक हराम तथा निषेध होगा।

[3]इससे तात्पर्य वह शोभा तथा शरीर का अंग है जिसका छिपाना तथा पर्दा करना असम्भव हो, जैसे किसी को कोई वस्तु पकड़ाते अथवा उससे लेते समय हथेलियों का अथवा देखते समय आँखों का प्रदर्शित हो जाना। इस सम्बन्ध में हाथ में जो अँगूठी पहने हुए अथवा मेंहदी लगी हुई, आँखों में सुर्मा अथवा काजल हो अथवा वस्त्र तथा शोभा को छिपाने के लिए जो नक़ाब अथवा चादर ली जाती है वह भी एक शोभा ही है। फिर भी यह शोभायें ऐसी हैं जिनका प्रदर्शन आवश्यकता के समय अथवा आवश्यकता के कारण उपयुक्त है।

[4]ताकि सिर, गर्दन तथा छाती का पर्दा हो जाये क्योंकि उन्हें भी नग्न करने की आज्ञा नहीं है।

إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ
أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ
أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ
أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ

प्रदर्शन किसी के समक्ष न करें[1] सिवाय अपने पतियों के [2] अथवा अपने पिता के अथवा अपने ससुर के अथवा अपने पुत्रों के अथवा अपने पति के पुत्रों के अथवा अपने भाईयों के अथवा भतीजों के अथवा अपने भाँजों के [3] अथवा अपनी सखियों के[4] अथवा दासों

---

[1]यह वही शोभा (सौन्दर्य प्रसाधन) अथवा सौन्दर्य है जिसे प्रदर्शित करना इससे पूर्व निषेध किया गया था। अर्थात वस्त्र तथा आभूषण जो चादर अथवा नक़ाब के नीचे होते हैं। यहाँ उनका वर्णन अतिरिक्त के विषय में आया है। अर्थात अमुक-अमुक व्यक्तियों के समक्ष इनका प्रदर्शन उचित है।

[2]इनमें सूची क्रम में सर्वोपरि पति है । इसीलिए पति को सर्वोपरि भी किया गया है क्योंकि पत्नी की सारी शोभा पति के लिए होती है तथा पति के लिए पत्नी का सम्पूर्ण शरीर उचित है। इसके अतिरिक्त जिन समीपवर्त्तियों तथा अन्य व्यक्तियों का घर में आना-जाना लगा रहता है तथा निकट सम्बन्धी होने के कारण अथवा अन्य कारणों से प्राकृतिक रूप से उनकी ओर काम भावना भी नहीं होती, जिससे बुराई की सम्भावना हो तो धार्मिक नियम से ऐसे व्यक्तियों के समक्ष जिनसे कोई भय न हो तथा सभी वे व्यक्ति जिनसे विवाह अमान्य है के समक्ष शोभा के प्रदर्शन की आज्ञा प्रदान की है। इस स्थान पर मामा तथा चाचा का वर्णन नहीं किया गया है। अधिकाँश आलिमों के निकट यह भी वे व्यक्ति हैं जिनसे विवाह अमान्य है जिनके समक्ष शोभा के प्रदर्शन की आज्ञा दी गई है तथा कुछ के निकट ऐसा नहीं है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]पिता में दादा, पितामह, नाना तथा नाना के पिता तथा उससे ऊपर सभी सम्मिलित हैं। इसी प्रकार ससुर में ससुर का पिता, दादा, पितामह ऊपर तक। पुत्रों में पौत्र, परपौत्र, नाती, परनाती नीचे तक। पति के पुत्रों में पौत्रों तथा परपौत्र नीचे तक, भाईयों में तीनों प्रकार के भाई (सगे, पिता की ओर से, माता की ओर से) तथा उनके पुत्र, पौत्र, परपौत्र, नाती, नीचे तक। भतीजों में उनके बेटे नीचे तक तथा भाँजों में तीनों प्रकार की बहनों की सन्तान सम्मिलित हैं।

[4]इनसे तात्पर्य मुसलमान महिलायें हैं जिनको इस बात से रोक दिया गया है कि वह किसी स्त्री की शोभा, सुन्दरता, तथा सौन्दर्य एवं शारीरिक बनावट का अपने पति के समक्ष वर्णन करें। कुछ ने इससे वे विशेष स्त्रियाँ तात्पर्य लिया है जो सेवा आदि के लिए हर समय साथ रहती हैं जिनमें दासियाँ भी सम्मिलित हैं।

أَوِ التَّٰبِعِينَ غَيۡرِ أُوْلِي ٱلۡإِرۡبَةِ مِنَ ٱلرِّجَالِ أَوِ ٱلطِّفۡلِ ٱلَّذِينَ لَمۡ يَظۡهَرُواْ عَلَىٰ عَوۡرَٰتِ ٱلنِّسَآءِۖ وَلَا يَضۡرِبۡنَ بِأَرۡجُلِهِنَّ لِيُعۡلَمَ مَا يُخۡفِينَ مِن زِينَتِهِنَّۚ وَتُوبُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ٣١

के[1] अथवा नौकरों में ऐसे पुरूषों के जिनको कामुकता न हो [2] अथवा ऐसे बच्चों के जो स्त्रियों के पर्दे की बातों के विषय में न जानते हों[3] तथा इस प्रकार से ज़ोर-ज़ोर से पैर मार कर न चलें कि उनके छुपे सिंगार का पता लग जाये। [4] तथा हे मुसलमानो ! तुम सब के सब अल्लाह के दरबार में क्षमा माँगो ताकि तुम मोक्ष पाओ।[5]

---

[1]कुछ ने इससे तात्पर्य दासियाँ तथा कुछ ने दास लिये हैं तथा कुछ ने दोनों ही। हदीस में है कि दास से पर्दे की आवश्यकता नहीं है। (अबू दाऊद किताबुल लिबास बाब फिल अब्द यनजुरू इला शआरे मौलातेही) इसी प्रकार कुछ ने सामान्य ही रखा है जिसमें ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों दास सम्मिलित हैं।

[2]कुछ ने इनसे केवल वही व्यक्ति तात्पर्य लिये हैं जिनका घर में रहने, खाने-पीने के अतिरिक्त कोई अन्य उद्देश्य नहीं। कुछ ने मूर्ख, कुछ ने नपुंसक तथा हिजड़े तथा कुछ ने अत्याधिक वृद्ध अर्थ लिये हैं। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि जिनके अन्दर क़ुरआन में वर्णित गुण पाये जायें, वे सभी इसमें सम्मिलित हैं तथा अन्य अलग होंगे।

[3]उनसे ऐसे बालक अलग होंगे जो वयस्क हों अथवा वयस्क अवस्था के निकट हों क्योंकि वे स्त्रियों के गुप्तांग से परिचित होते हैं।

[4]ताकि पैरों के आभूषणों की झंकार से पुरूषों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित न हो। इसमें ऊँची ऐड़ी की वह सैंडिल भी आ जाती है जिन्हें महिलायें पहनकर चलती हैं, तो टक-टक की ध्वनि होती है, जो आभूषणों की ध्वनि से कम नहीं होती। इसी प्रकार हदीस में आता है कि स्त्री के लिए सुगन्ध लगाकर घर से बाहर निकलना उचित नहीं, जो महिला ऐसा करती है, वह व्यभिचारिणी है। (तिर्मिज़ी अबवाबुल इस्तीज़ान, अबू दाऊद किताबुल तरज्जुल)

[5]यहाँ पर्दे के आदेशों में क्षमा माँगने का आदेश देने में यह दूरदर्शिता प्रतीत होती है कि अज्ञानकाल में इन आदेशों की जो अवहेलना भी तुम करते रहे हो, चूँकि वे इस्लाम के पूर्व की बातें थीं, यदि तुमने शुद्ध हृदय से क्षमा माँग ली तथा इन वर्णित आदेशों के अनुरूप पर्दे का प्रबन्ध किया तो भलाई तथा सफलता तथा दुनिया एवं आख़िरत की भलाई तुम्हारे भाग्य है।

(३२) तथा तुम में से जो पुरूष-स्त्री यौवन को पहुँच गये हों उनका विवाह कर दो[1] तथा अपने सदाचारी दास-दासियों का भी,[2] यदि वे निर्धन भी होंगे तो अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से धनवान बना देगा ।[3] अल्लाह (तआला) उदार तथा ज्ञान वाला है ।

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

(३३) तथा उन लोगों को पवित्र रहना चाहिए जो अपना विवाह करने का सामर्थ्य नहीं

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا

---

[1] أيامى बहुवचन है أيم का । أيم ऐसी स्त्री को कहा जाता है जिसका पति न हो, जिसमें कुँवारी, विधवा तथा तलाक प्राप्त तीनों सम्मिलित हैं तथा ऐसे पुरूष को भी أيم कहते हैं जिसकी पत्नी न हो । आयत में संरक्षकों से सम्बोधन है कि विवाह कर दो, यह नहीं कहा कि विवाह कर लो । इससे ज्ञात हुआ कि स्त्री संरक्षक की आज्ञा तथा प्रसन्नता के बिना विवाह नहीं कर सकती जिसकी पुष्टि हदीसों से भी होती है । इसी प्रकार आज्ञा वाचक के आधार पर कुछ ने यह अर्थ निकाला है कि विवाह करना आवश्यक (अनिवार्य) है, जबकि कुछ ने इसे अनुमत (मुबाह) तथा कुछ ने उत्तम (मुस्त हब) कहा है परन्तु शक्ति रखने वाले के लिए सुन्नत मुअक्किद: (बलपूर्वक सुन्नत) तथा कभी आवश्यक है तथा इससे मुख मोड़ना कड़ी चेतावनी का कारण है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है ومن رغب عن سنتي فليس مني "जिसने मेरी सुन्नत से मुख मोड़ा वह मुझसे नहीं ।" (अल-बुख़ारी संख्या ५०६३ तथा मुस्लिम संख्या १०२०)

[2]यहाँ صالحيت से तात्पर्य ईमान है । इसमें मतभेद है कि स्वामी अपने दास-दासियों को विवाह करने के लिए बाध्य कर सकते हैं अथवा नहीं ? कुछ बाध्य करने के पक्ष में हैं, कुछ नहीं । परन्तु हानि की सम्भावना हो तो धार्मिक नियमों के अनुसार बाध्य करना उचित है । अन्य परस्थिति में अवैध (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]अर्थात मात्र निर्धनता तथा धन की कमी विवाह में बाधक नहीं होनी चाहिए । सम्भव है कि विवाह के पश्चात अल्लाह उनकी निर्धनता को अपनी कृपा तथा दया से सुख-सम्पन्नता में परिवर्तित कर दे । हदीस में आता है तीन व्यक्ति हैं जिनकी अल्लाह अवश्य सहायता करता है एक विवाह करने वाले की जो सदाचार की भावना से विवाह करता है, दूसरे स्वाधीनता-पत्र प्राप्त दास, जो धन अदा करने का विचार रखता है, तीसरा अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने वाला । (तिर्मिज़ी अबवाब फ़ज़ायेलिल जिहाद, बाब माजाअ फ़िल मुजाहिद वल मुकातिब वल निकाह)

حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ

रखते ।[1] यहाँ तक कि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से उन्हें धनवान बना दे। तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर स्वाधीनता-लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो यदि तुमको उनमें कोई भलाई दिखती हो।[2] तथा अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उसमें से उन्हें भी दो।[3] तुम्हारी दासियाँ जो पवित्र रहना चाहती हैं, उन्हें साँसारिक जीवन के लाभ के कारण

---

[1]हदीस में पवित्रता के लिए, जब तक विवाह का सामर्थ्य न हो जाये, ऐच्छिक व्रत (नफ़ली रोज़े) रखने पर बल दिया गया है, फ़रमाया : हे नवयुवकों के गुटो ! तुम में से जो विवाह की शक्ति रखता है उसे (अपने समय पर) विवाह कर लेना चाहिए, इसलिए कि इससे नेत्रों की तथा योनियों की रक्षा होती है तथा जो विवाह की शक्ति नहीं रखता, उसे चाहिए कि वह (अधिकतर ऐच्छिक) व्रत रखे, व्रत उसकी काम भावना को नियन्त्रण में रखेंगे। (अल-बुख़ारी किताबुस सौम, बाब अस्सौम लेमन ख़ाफ़ अला नफ़्सेही अज़ूब:, मुस्लिम अव्वल किताबुल निकाह)

[2] مكاتب उस दास को कहा जाता है जो अपने स्वामी से संधि कर लेता है कि मैं इतनी राशि एकत्रित करके भुगतान कर दूँगा तो स्वतन्त्रता का अधिकारी हूँगा। भलाई देखने का अर्थ है उसकी सत्यता तथा निक्षेप पर तुम्हें विश्वास हो अथवा किसी व्यवसाय तथा उद्योग की वह जानकारी रखता हो ताकि वह परिश्रम करके धनोपार्जन करे तथा धन की राशि का भुगतान कर दे। इस्लाम ने चूँकि अधिक से अधिक दासता के विरूद्ध नीति अपनायी थी। इसलिए यहाँ भी स्वामियों को बलपूर्वक कहा गया कि स्वाधीनता लेख इच्छुक दासों से संधि करने में आलस्य न करो, जबकि तुम्हें उनके अंदर ऐसे गुण का ज्ञान हो जिससे तुम्हारी राशि का भुगतान होने की सम्भावना हो। कुछ आलिमों के निकट यह आदेश का पालन अनिवार्य तथा कुछ के निकट उत्तम है।

[3]इसका अर्थ है कि दास्ता से मुक्ति के लिए उसने जो संधि की है तथा अब धन राशि की उसे आवश्यकता है ताकि संधि के अनुसार वह राशि का भुगतान कर दे, तो तुम भी उसके साथ आर्थिक सहायता करो, यदि अल्लाह ने तुम्हें इस योग्य बनाया हो। अतः अल्लाह ने ज़कात की राशि के प्रयोग करने के जो आठ प्रकार (सूरः *अल-तौबा-६०*) में वर्णन किये हैं, उनमें से एक وفي الرقاب भी है। जिसका अर्थ है, गर्दन मुक्त कराने में। अर्थात दासों की स्वाधीनता पर भी ज़कात (धर्मदान) की राशि व्यय की जा सकती है।

الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾

कुकर्म पर बाध्य न करो ।[1] तथा जो उन्हें बाध्य कर दे तो अल्लाह (तआला) उनके विवश किये जाने के पश्चात क्षमा कर देने वाला तथा कृपा करने वाला है ।[2]

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा हमने तुम्हारी ओर खुली तथा ज्योर्तिमय आयतें उतारी हैं तथा उन लोगों की कहावतें जो तुम लोगों से पूर्व गुज़र चुके हैं तथा परहेज़गारों के लिए शिक्षा ।

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ

(३५) अल्लाह दिव्य ज्योति है आकाशों की तथा धरती की[3] उसकी ज्योति की तुलना एक

---

[1]अज्ञान काल में लोग मात्र साँसारिक धन अर्जित करने के लिए अपनी दासियों को व्यभिचार पर बाध्य करते थे । चाहे न चाहे उसे यह अपमान का कलंक सहन करना पड़ता था । अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसा करने से रोका है । إن أردن संभावित परस्थितियों के आधार पर है । वरन् उद्देश्य यह नहीं है कि यदि वह व्यभिचार को प्रिय समझे तो फिर तुम उनसे यह कार्य करवा लिया करो । बल्कि यह आदेश देना उद्देश्य है कि दासियों से संसार के थोड़े से धन के लिए, यह कुकर्म न करवाओ, क्योंकि इस प्रकार का धन आर्जन ही निषेध है ।

[2]अर्थात जिन दासियों से बलपूर्वक व्यभिचार करवाया जायेगा तो पापी स्वामी होगा अर्थात बाध्य करने वाला, न कि दासी जो अबला है । हदीस में आता है, मेरे सम्प्रदाय से त्रुटि, भूल तथा ऐसे कार्य जो बलपूर्वक कराये गये हों, क्षमा हैं । (इब्ने माजा किताबुत तलाक़ वाब तलाक़िल मुकरहे वन्नासी)

[3]अर्थात यदि अल्लाह न होता तो न आकाश में प्रकाश होता न धरती में, न आकाश तथा धरती में किसी को संमार्ग सुलभ होता । अतः वह अल्लाह (तआला) ही आकाश तथा धरती को प्रकाश प्रदान करने वाला है । उसकी किताब दिव्य ज्योति है, उसका रसूल (अपने गुणों के आधार पर) दिव्य ज्योति है । अर्थात इन दोनों के माध्यम से जीवन के अंधकार में मार्गदर्शन तथा प्रकाश प्राप्त होता है, जिस प्रकार दीप अथवा बल्ब से मनुष्य प्रकाश प्राप्त करता है । हदीस से भी अल्लाह का दिव्य ज्योति होना सिद्ध है । «وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ». (अल-बुख़ारी बाबुत तहज्जुदे बिल्लैल तथा मुस्लिम किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन बाबुद्दुआ फ़ी सलातिल लैल) अतः अल्लाह स्वयं साक्षात दिव्य ज्योति है, उसका पर्दा दिव्य ज्योति है तथा प्रत्येक भौतिक

ताखा की है जिस पर दीप है तथा दीप शीशे की झाड़ में हो तथा शीशा चमकते हुए प्रकाशमान सितारे की भाँति हो तथा वह दीप पवित्र वृक्ष जैतून के तेल से जलाया जाता हो, जो वृक्ष न पूर्वी है न पश्चिमी स्वयं वह तेल ही समीप (सम्भव) है कि प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसको कदापि आग न छुई हो, ज्योति पर ज्योति है,[1] अल्लाह (तआला) अपने दिव्य ज्योति की ओर मार्गदर्शन करता है जिसे चाहे।[2] लोगों को समझाने के लिए ये उदाहरण अल्लाह (तआला) दे रहा है।[3] तथा अल्लाह (तआला)

نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِىْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِىْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۙ﴿٣٥﴾

तथा आत्मिक दिव्य ज्योति का स्रष्टा तथा प्रदान करने वाला एवं उसकी ओर मार्गदर्शन करने वाला केवल एक अल्लाह है। (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]अर्थात जिस प्रकार एक ताखा पर ऐसा दीप हो जो काँच के झाड़ में हो उसमें एक शुभ वृक्ष का ऐसा शुद्ध तेल डाला गया हो कि वह अग्नि (माचिस) दिखाये बिना ही स्वयं प्रकाशित हो जाने के निकट हो। इस प्रकार ये सारे प्रकाश एक ताखा में एकत्रित हो गये तथा वह सर्वथा दिव्य प्रकाश बन गया। इसी प्रकार अल्लाह के हर तर्क तथा युक्तियों की दशा है कि वह स्पष्ट भी हैं तथा एक से एक बढ़कर भी दिव्य ज्योति पर ज्योति हैं। जो पूर्वी है न पश्चिमी का अर्थ है, वह वृक्ष ऐसे खुले मैदान तथा मरूस्थल में है कि उस पर धूप केवल सूर्य चढ़ने के समय अथवा अस्त होने के समय ही नहीं पड़ती, अपितु सारा दिन धूप में रहता है तथा ऐसे वृक्ष का फल अति स्वादिष्ट होता है तथा तात्पर्य इससे जैतून का वृक्ष है जिसका फल तथा तेल भोजन के रूप में भी प्रयोग होता है तथा दीप में तेल के रूप में प्रयोग होता है।

[2]दिव्य ज्योति से तात्पर्य ईमान तथा इस्लाम है, अर्थात अल्लाह तआला जिनके अन्तरात्मा में प्रेम तथा उसके प्राप्त करने की रूचि देखता है, उनका इस दिव्य ज्योति की ओर मार्गदर्शन करता है जिससे धर्म तथा संसार की सफलताओं के द्वार उनके लिए खुल जाते हैं।

[3]जिस प्रकार से अल्लाह तआला ने यह उदाहरण दिया जिसमें उसने ईमान को तथा अपने ईमान वाले भक्तों के दिलो में इसके संचित होने तथा भक्तों के दिलों की स्थिति से अवगत होने को स्पष्ट किया कि कौन मार्गदर्शन का पात्र है तथा कौन नहीं।

प्रत्येक वस्तु की स्थिति से भली-भाँति परिचित है।

(३६) उन घरों में जिनके उच्च करने का तथा वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने आदेश दिया है,[1] वहाँ प्रात: तथा सायंकाल अल्लाह (तआला) की महिमा का वर्णन करते हैं।[2]

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ

---

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों के दिल को तथा उसमें जो ईमान तथा मार्गदर्शन तथा ज्ञान है, उसका ऐसे दीप से तुलना की है जो कांच के झाड़ में हो तथा जो स्वच्छ शुद्ध तेल से प्रकाशित हो तो अब उसका स्थान वर्णन किया जा रहा है कि यह झाड़ ऐसे घरों में है जिन के विषय में आदेश दिया गया है कि उन्हें उच्च किया जाये तथा उनमें अल्लाह का वर्णन किया जाये। तात्पर्य मस्जिदें हैं, जो अल्लाह को धरती पर अत्यधिक प्रिय हैं। उच्च का तात्पर्य मात्र पत्थरों तथा ईटों की उच्चता नहीं है बल्कि इसमें मस्जिदों को मालीनता, बकवास तथा अनुचित बातों एवं कर्मों से पवित्र रखना भी सम्मिलित है। वरन् मात्र मस्जिदों को ऊँचा एवं भव्य बना देना सब कुछ नहीं है बल्कि हदीस में मस्जिदों को अधिक अलंकृत करने से रोका गया है। तथा एक हदीस में तो इसे क़ियामत के निकट होने के लक्षणों में से एक लक्षण बताया गया है। (अबू दाऊद किताबुस्सलात वाबुन फ़ी बिनाइल मसाजिद) इसके अतिरिक्त जिस प्रकार मस्जिदों में व्यापार तथा व्यवसाय एवं शोर करना निषेध है क्योंकि यह मस्जिद के मूल उद्देश्य के विपरीत है। उसी प्रकार अल्लाह का स्मरण करने में यह बात भी सम्मिलित है कि केवल एक अल्लाह का वर्णन किया जाये उसी की इबादत की जाये, केवल उसी को सहायता के लिए पुकारा जाये।

﴿وَاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا﴾

"मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं, अत: अल्लाह के साथ किसी को न पुकारो।" (सूर: जिन्न-१८)

[2]'तस्वीह' से तात्पर्य नमाज़ है। آصال बहुवचन है أصيل का, अर्थ है संध्या। अर्थात ईमानवाले, जिन के दिल ईमान तथा मार्गदर्शन से प्रकाशित होते हैं, प्रात:-सायं मस्जिदों में अल्लाह की प्रसन्नता के लिए नमाज़ पढ़ते तथा उसकी इबादत (उपासना) करते हैं।

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَوٰةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَوٰةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

(३७) ऐसे लोग[1] जिन्हें व्यापार तथा क्रय-विक्रय अल्लाह के वर्णन से तथा नमाज़ स्थापित करने तथा ज़कात अदा करने से अचेत नहीं करते, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल तथा बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जायेंगी ।[2]

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

(३८) इस उद्देश्य से कि अल्लाह तआला उन्हें उनके कर्म का श्रेष्ठतम बदला दे तथा अपनी कृपा से कुछ अधिक ही प्रदान करे । तथा अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत वृत्तियाँ (जीविका) देता है ।[3]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ

(३९) तथा काफ़िरों के कर्म उस चमकती रेत की भाँति हैं, जो खुले मैदान में हो जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है, परन्तु

---

[1]इससे अर्थ निकाला गया है कि यद्यपि महिलायें मस्जिदों में जाकर नमाज़ पढ़ सकती हैं, किन्तु सादे वस्त्रों में, बिना सुगन्ध लगाये तथा पर्दे के साथ हों तो जायें, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रिसालत के काल में महिलायें मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए उपस्थिति हुआ करती थीं परन्तु उनके लिए घर में नमाज़ पढ़ना अति उत्तम एवं श्रेष्ठ है । हदीस में भी इस बात का वर्णन किया गया है । (अबू दाऊद, किताबुस्सलात, बाबुल तशदीद फ़ी ज़ालिक, मुसनद अहमद भाग ६, पृष्ठ २९७ तथा ३०१)

[2]अर्थात अति घबराहट के कारण । जिस प्रकार अन्य स्थान पर है ।

﴿ وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ﴾

"उनको क़ियामत वाले दिन से डराओ, जिस दिन दिल गले तक आ जायेंगे शोक से भरे हुए ।" (*सूर: अल-मोमिन-१८*)

प्रारम्भ में दिलों की स्थिति यह सभी की होगी, ईमानवालों की तथा काफ़िरों की भी ।

[3]क़ियामत के दिन ईमानवालों को उनके पुण्य का बदला أضعافا مضاعفة (कई-कई गुना) के रूप में प्रदान किया जायेगा तथा अधिकतर को बिना हिसाब ही स्वर्ग दिया जायेगा तथा वहाँ जीविका की जो अधिकता तथा उसमें जो नवीनता एवं स्वाद होगा, उसका तो अनुमान ही नहीं किया जा सकता ।

إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِندَهُ فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

जब उसके निकट पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता । हाँ, अल्लाह को अपने निकट पाता है जो उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है ।[1] अल्लाह (तआला) अतिशीघ्र हिसाब कर देने वाला है ।

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ﴿٤٠﴾

(४०) अथवा उन अंधकार के समान है जो अति गहरे समुद्र में हों जिसे ऊपर-नीचे की धाराओं ने ढक लिया हो, फिर ऊपर से बादल छाये हों । अर्थात अंधकार हैं जो ऊपर-नीचे एक के ऊपर एक हों । जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी सम्भवत: न देख सके,[2] और (बात यह है कि) जिसे अल्लाह (तआला) ही

---

[1] أعمال (कर्म) से तात्पर्य वे कर्म हैं जिन्हें काफिर तथा मूर्तिपूजक पुण्य समझ कर करते हैं, जैसे दान-दक्षिणा, सबन्धियों के साथ स्वभाव, अल्लाह के घर का निर्माण, तथा हाजियों की सेवा आदि । سَراب (मृगतृष्णा) उस चमकती हुई रेत को कहते हैं, जो दूर से सूर्य की किरणों के कारण पानी दिखायी पड़ती हैं سَراب का अर्थ चलने के भी हैं । वह रेत चलते हुए पानी की तरह दिखायी देती है । قيعة बहुवचन है قاع का, जिसका अर्थ है धरती का निचला भाग, जिसमें पानी ठहर जाता है अथवा समतल मैदान । यह काफ़िरों के कर्मों की उपमा है कि जिस प्रकार मृगतृष्णा दूर से पानी दिखायी देती है, जबकि वह रेत ही होती है । इसी प्रकार काफ़िर के कर्म ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष बिल्कुल भार विहीन होंगे, उनका कोई भी फल उन्हें प्राप्त नहीं होगा । परन्तु जब वह अल्लाह के पास जायेगा तो वह उसके कर्मों का पूरा-पूरा हिसाब चुका लेगा ।

[2] यह दूसरी उपमा है कि उनके कर्म अंधकार के समान हैं, अर्थात उन्हें मृगतृष्णा से उपमा दे लो अथवा अंधकार से । अथवा पूर्व की उपमा काफ़िरों के कर्मों की थी तथा यह उसके कुफ़्र की उपमा है, जिसमें काफ़िर अपने पूरे जीवन में घिरा रहता है, कुफ़्र तथा मार्ग के अंधकार, बुरे कर्म तथा मिथ्यावादी विश्वास के अंधकार तथा प्रभु से तथा उसकी आख़िरत की यातना से एकदम अज्ञानता का अंधकार । यह अंधकार उसे मार्गदर्शन की ओर आने नहीं देते जिस प्रकार अंधकार में मनुष्य को अपना हाथ दिखायी नहीं देता ।

प्रकाश न दे, उसके पास कोई प्रकाश नहीं होता।[1]

(४१) क्या आपने नहीं देखा कि आकाश तथा धरती की सभी सृष्टि तथा पंख फैलाये उड़ने वाले सभी पक्षी[2] अल्लाह की महिमागान में लीन हैं। प्रत्येक की नमाज़ तथा महिमागान उसे ज्ञात है।[3] तथा लोग जो कुछ करें उससे अल्लाह भली-भाँति अवगत है।[4]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَٰٓفَّٰتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌۢ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾

---

[1]अर्थात संसार में ईमान तथा इस्लाम का प्रकाश सुलभ नहीं होता तथा आख़िरत में भी ईमान वालों को मिलने वाली दिव्य ज्योति से वह वंचित रहेंगे।

[2] صافات का अर्थ है باسطات तथा इसका कर्म कारक أجنحتها लोप है। अपने पंख फैलाये हुए। من في السماوات والأرض में पक्षी भी सम्मिलित थे। परन्तु यहाँ उनका अलग से वर्णन किया, इसलिए कि पक्षी सभी जीवधारी पशुओं में एक महत्वपूर्ण सृष्टि हैं जो अल्लाह के पूर्ण शक्ति से आकाश तथा धरती के मध्य वायुमण्डल में उड़ते हुए अल्लाह की महिमा का वर्णन करती हैं। यह सृष्टि उड़ने की भी शक्ति रखती है जिससे अन्य जीवधारी वंचित हैं तथा धरती पर चलने-फिरने की शक्ति भी रखती है।

[3]अर्थात अल्लाह ने प्रत्येक सृष्टि के मन में यह ज्ञान डाल दिया है कि वह अल्लाह की महिमा का वर्णन किस प्रकार करे। जिसका अर्थ यह है कि यह भाग्य अथवा संयोग की बात नहीं बल्कि आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तु का अल्लाह की प्रशंसा करना तथा नमाज़ अदा करना यह भी अल्लाह के सामर्थ्य का एक द्योतक है, जिस प्रकार उनकी सृष्टि अल्लाह की एक विचित्र कलाकारी है, जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी का सामर्थ्य नहीं।

[4]अर्थात धरती वाले तथा आकाश वाले जिस प्रकार अल्लाह के आदेशों का पालन तथा उसकी प्रंशसा करते हैं, सब उसके ज्ञान में है, यह जैसाकि मनुष्यों तथा जिन्नों को चेतावनी है कि तुम्हें अल्लाह ने बुद्धि तथा विचार की स्वतन्त्रता प्रदान की है, तो तुम्हें अन्य सृष्टि की अपेक्षा अधिक प्रशंसा तथा महिमा का वर्णन तथा उसका आज्ञा पालन करना चाहिए। परन्तु वास्तविकता इसके विपरीत है। अन्य सृष्टि तो अल्लाह की प्रशंसा में संलग्न हैं। परन्तु बुद्धि तथा समझ से सुशोभित सृष्टि इसमें आलस्य कर रही है, जिस पर निःसंदेह वे अल्लाह की पकड़ के अधिकारी होंगे।

(४२) धरती तथा आकाश का राज्य अल्लाह ही का है तथा अल्लाह (तआला) ही की ओर लौटकर जाना है ।[1]

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

(४३) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) बादलों को चलाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह पर तह कर देता है । फिर आप देखते हैं कि उनके मध्य से वर्षा होती है । वही आकाश की ओर से ओलों के पर्वत से ओले बरसाता है,[2] फिर जिन्हें चाहे उन्हें उनके पास बरसाये तथा जिनसे चाहे उनसे उन्हें हटा दे ।[3] बादलों से ही निकलने वाली तड़ित की चमक ऐसी होती है कि जैसे अब आँखों की दृष्टि ले चली ।[4]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَٰلِهِ ۖ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَٰرِ ﴿٤٣﴾

---

[1]अत: वही मूल स्वामी है जिसके आदेश का कोई पीछा करने वाला नहीं तथा वही सत्य पूज्य है जिसके अतिरिक्त किसी की भी इबादत मान्य नहीं । उसी की ओर सभी को लौटकर जाना है, जहाँ वह प्रत्येक का न्यायपूर्वक निर्णय देगा ।

[2]इसका एक अर्थ तो यही है जो अनुवाद में प्रयोग किया गया है कि आकाश में ओलों के पर्वत हैं जिनसे वह ओलों की वर्षा करता है । (इब्ने कसीर) दूसरा अर्थ यह वर्णन किया गया है कि سماء "ऊँचाई" के अर्थ में है तथा جبال का अर्थ है, बड़े-बड़े टुकड़े पर्वतों जैसे अर्थात अल्लाह तआला आकाश से वर्षा ही नहीं करता बल्कि ऊपर से जब चाहता है तो बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े भी बरसाता है (फ़तहुल क़दीर) अथवा पर्वत जैसे बड़े-बड़े बादलों से ओले बरसाता है ।

[3]अर्थात वह ओले तथा वर्षा कृपास्वरूप जिन्हें चाहता है, पहुँचाता है तथा जिन्हें चाहता है उनसे वंचित रखता है । अथवा यह अर्थ है कि ओले की वर्षा के प्रकोप से जिसे चाहता है पीड़ित करता है, जिससे उसकी फसलें नाश तथा खेती बरबाद हो जाती हैं तथा जिन पर अपनी कृपा करना चाहता है उनको उससे बचा लेता है ।

[4]अर्थात बादलों में चमकने वाली तड़ित, जो सामान्यत: वर्षा की शुभसूचक होती है उसमें इतनी तीव्र चमक होती है कि वह नेत्रों की दृष्टि समाप्त कर देने के निकट होती हैं । यह भी उसकी कारीगरी का नमूना है ।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾

(४४) अल्लाह तआला ही दिन-रात का उलट-फेर करता रहता है।[1] आँखों वालों के लिए नि:संदेह इसमें बड़ी-बड़ी शिक्षायें हैं।

وَ اللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾

(४५) सभी के सभी चलने-फिरने वाले जीवधारी को अल्लाह (तआला) ने पानी से पैदा किया है। उनमें से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं,[2] कुछ दो पैर के बल चलते है,[3] कुछ चार पैरों पर चलते हैं।[4] अल्लाह (तआला) जो चाहता है पैदा करता है।[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।

لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾

(४६) नि:संदेह हमने प्रकाशमय तथा खुली आयतें अवतरित की हैं। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे सीधा मार्ग दिखा देता है।[6]

---

[1]अर्थात कभी दिन बड़े, रातें छोटी तथा कभी इसके विपरीत अथवा कभी दिन के प्रकाश को वादलों के अंधकार से तथा रात्रि के अंधेरों को चन्द्रमा के प्रकाश से बदल देता है।

[2]जिस प्रकार सांप, मछली तथा अन्य धरती पर चलने वाले कीड़े मकोड़े हैं।

[3]जैसे मनुष्य तथा पक्षी हैं।

[4]जैसे सभी चौपाये तथा अन्य जीव हैं।

[5]यह संकेत इस बात की ओर है कि कुछ जीव ऐसे भी हैं जो चार से भी अधिक पैर रखते हैं, जैसे केकड़े, मकड़ी, खंखजूरा तथा बहुत से धरती के कीड़े।

[6] آيات مبينات से तात्पर्य क़ुरआन करीम है, जिसमें प्रत्येक उस वस्तु का वर्णन है जिसका सम्बन्ध मनुष्य के धर्म तथा व्यवहार से है जिस पर उसकी भलाई तथा सफलता आधारित है।

﴿ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ﴾

"हमने किताब में किसी चीज़ के वर्णन में कमी नहीं की।" (सूर: *अल-अनआम-३८*)

(४७) तथा कहते हैं कि हम अल्लाह (तआला) तथा रसूल पर ईमान लाये तथा आज्ञाकारी हुए, फिर उनमें से एक गुट उसके पश्चात भी मुख मोड़ लेता है। ये ईमानवाले हैं ही नहीं।[1]

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) तथा जब ये इस बात की ओर बुलाये जाते हैं कि अल्लाह तथा उसका रसूल (उनके झगड़ों) का निर्णय कर दे, तो भी उनका एक गुट मुख मोड़ने वाला बन जाता है।

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) तथा यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो तो आज्ञाकारी होकर उसकी ओर चले आते हैं।[2]

وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ﴿٤٩﴾

(५०) क्या उनके दिलों में रोग है ? अथवा ये शंका तथा संदेह में पड़े हुए हैं ? अथवा उन्हें इस बात का भय है कि अल्लाह (तआला) तथा उसका रसूल उनके अधिकारों का हनन न

أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ

जिसे मार्गदर्शन सुलभ होता है, अल्लाह तआला उसे उचित दृष्टि तथा सत्य हृदय प्रदान करता है, जिससे उसके मार्गदर्शन का मार्ग खुल जाता है। صراط مستقيم से तात्पर्य यही मार्गदर्शन है जिसमें कोई त्रुटि नहीं, उसे अपना कर मनुष्य अपने लक्ष्य स्वर्ग तक पहुँच जाता है।

[1]यह द्वयवादियों (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है, जो मुख से इस्लाम का प्रदर्शन करते थे परन्तु हृदय में कुफ़्र तथा ईर्ष्या रखते थे अर्थात 'सत्य विश्वास' से वंचित थे। इसलिए मुख से ईमान के प्रदर्शन के उपरान्त उनके ईमान का इंकार किया गया है।

[2]क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के न्यायालय से जो निर्णय होगा, उसमें किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होगा, इसलिए वहाँ अपना वाद ले जाने से ही बचते हैं। हाँ, यदि वे जानते हैं कि वे सत्य पर हैं तथा उन्हीं के पक्ष में न्याय होने का पूर्ण विश्वास है, तो फिर प्रसन्नता से वहाँ आते हैं। إذعان का अर्थ होता है स्वीकार तथा आज्ञापालन एवं अधीनता।

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٥٠

कर दें ? बात यह है कि ये लोग स्वयं ही बड़े ज़ालिम हैं ।[1]

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥١

(५१) ईमानवालों का कथन तो यह है कि जब उन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह तथा उसका रसूल उनमें निर्णय कर दे तो वह कहते हैं कि हमने सुना तथा मान लिया ।[2] यही लोग सफल होने वाले हैं ।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝٥٢

(५२) तथा जो भी अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करें, अल्लाह का भय रखें तथा (उसकी यातना से) डरते रहें, वही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं ।[3]

---

[1]जब निर्णय उनके विरूद्ध होने की संम्भावना होती है तो उससे मुख मोड़ने व बचने का कारण वर्णन किया जा रहा है कि या तो उनके दिलों में कुफ्र तथा भेद का रोग है अथवा उन्हें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत में संदेह है अथवा उन्हें इस बात की सम्भावना है कि उन पर अल्लाह तथा उनका रसूल अत्याचार करेगा, यद्यपि उनकी ओर से अत्याचार की कोई संभावना ही नहीं । बल्कि वास्तविकता यह है कि वे स्वयं अत्याचारी हैं । इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि जब न्याय तथा निर्णय के लिए ऐसे अधिकारी अथवा न्यायाधीश की ओर बुलाया जाये, जो न्याय तथा क़ुरआन एवं सुन्नत का ज्ञानी हो, तो उसके पास जाना अनिवार्य है । परन्तु यदि वह न्यायाधीश किताब एवं सुन्नत के ज्ञान तथा उनके तर्कों से अनभिज्ञ हो तो उसके पास निर्णय के लिए जाना आवश्यक नहीं ।

[2]यह काफ़िर तथा द्वयवादी के सापेक्ष ईमान वालों के व्यवहार तथा कर्मों का वर्णन है ।

[3]अर्थात भलाई एवं सफलता के अधिकारी केवल वह लोग होंगे जो अपनी सभी समस्याओं में अल्लाह तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय को प्रसन्न हृदय से स्वीकार करते तथा उन्हीं का अनुपालन करते हैं तथा संयम तथा अल्लाह के डर से युक्त हैं, न कि अन्य लोग जो इन गुणों से वंचित हैं ।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُل لَّا تُقْسِمُوا ۖ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा वे अति दृढ़ता के साथ अल्लाह (तआला) की सौगन्ध खा-खाकर कहते हैं[1] कि आप का आदेश होते ही निकल खड़े होंगे। कह दीजिए कि बस सौगन्ध न खाओ, तुम्हारे आज्ञापालन (की वास्तविकता) विदित है।[2] जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) उससे परिचित है।[3]

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

(५४) कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) के आदेश का पालन करो, रसूल का अनुकरण करो, फिर भी यदि तुमने मुख मोड़ा तो रसूल का कर्तव्य तो केवल वही है, जो उस पर अनिवार्य कर दिया गया है।[4] तथा तुम पर उस का उत्तरदायित्व है जो तुम पर रखा गया

---

[1] جهد أيمانهم में جهد लुप्त क्रिया का धातु है, जो बल देने के लिए है अथवा यह दशावाची है इसलिए उसे के ऊपर 'अ' की मात्रा है अर्थात مجتهدين في أيمانهم। अर्थ यह है कि अपनी शक्ति भर सौगन्ध खाकर कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]तथा वह यह है कि जिस प्रकार की तुम झूठी सौगन्ध खाते हो तुम्हारा आज्ञापालन भी द्वयवादिता पर आधारित है। कुछ ने यह अर्थ किये हैं कि तुम्हारा मामला तो आज्ञापालन होना चाहिए। अर्थात सत्कर्म में बिना किसी प्रकार की सौगन्ध के आज्ञाकारिता जिस प्रकार से मुसलमान करते हैं, अत: तुम भी उनके समान हो जाओ। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात वह तुम्हारे सब की स्थितियों से परिचित है। कौन आज्ञाकारी है तथा कौन अवज्ञाकारी ? अत: सौगन्ध खाकर आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करने से, जबकि तुम्हारे दिल में उसके विरूद्ध लक्ष्य हो, तुम अल्लाह को धोखा नहीं दे सकते, इसलिए कि वह गुप्त से गुप्त बात को भी जानता है तथा वह तुम्हारे दिलों में पलने वाली गुप्त बातों से भी परिचित है, चाहे तुम अपने मुख से उसके विरूद्ध प्रदर्शन करो।

[4]अर्थात आदेश पहुँचाने तथा धर्म के आमन्त्रण का कर्तव्य जो वह अदा कर रहा है।

है,[1] मार्गदर्शन तो तुम्हें उसी समय मिलेगा जब रसूल की आधीनता स्वीकार करोगे,[2] (सुनो,) रसूल का कर्तव्य केवल साफ़-साफ़ पहुँचा देना है ।[3]

(५५) तुम में से जो ईमान लाये हैं तथा पुण्य का कार्य किया है अल्लाह (तआला) वादा कर चुका है कि उन्हें राज्य (धरती) का अधिकारी बनायेगा, जैसाकि उन लोगों को अधिकारी बनाया था जो उनसे पूर्व थे तथा नि:संदेह उनके लिए उनके इस धर्म को सुदृढ़ता के साथ स्थापित कर देगा जिसे उनके लिए वह पसन्द कर चुका है तथा उनके इस डर एवं भय को शान्ति व अमन में परिवर्तित कर देगा,[4] वे मेरी

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۚ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ۚ وَمَنْ كَفَرَ

---

[1]अर्थात उसके आमन्त्रण को स्वीकार करके अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाना तथा उनका पालन करना ।

[2]इसलिए कि वह सीधे मार्ग की ओर आमन्त्रण देता है ।

[3]कोई उसके आमन्त्रण को स्वीकार करे या न करे, जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया,

﴿ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴾

"हे पैग़म्बर ! तेरा कार्य केवल (हमारे आदेश) पहुँचा देना है (कोई स्वीकार करे अथवा न करे) यह हिसाब हमारा काम है ।" (सूर: अर्-रअ़द-४०)

[4]कुछ ने इस अल्लाह के वादे को सहाबा कराम के साथ अथवा ख़ुलफ़ाये राशदीन के साथ विशेष रूप से सम्बन्धित किया है, परन्तु इसकी इस विशेषता का कोई प्रमाण नहीं है । क़ुरआन के शब्द सामान्य हैं तथा ईमान तथा पुण्य कार्य के साथ प्रतिबन्धित हैं । परन्तु यह बात अवश्य है कि ख़िलाफ़ते राशिदा के काल में तथा पुण्य काल में, यह अल्लाह का वादा प्रकट हुआ, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को धरती पर प्रभावशाली बनाया, अपने प्रिय धर्म इस्लाम को उन्नति प्रदान की तथा मुसलमानों के भय को शान्ति में परिवर्तित कर दिया । पहले मुसलमान अरब के काफ़िरों से भयभीत होते थे, फिर उसके विपरीत मामला हो गया । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी जो भविष्यवाणी

بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡفَٰسِقُونَ۝

इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी को सम्मिलित नहीं करेंगे।[1] उस के पश्चात भी जो लोग कृतघ्नता करें तथा कुफ्र करें तो वे नि:संदेह अवज्ञाकारी हैं।[2]

وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ

(५६) तथा नमाज़ स्थापित करो, ज़कात अदा करो तथा अल्लाह (तआला) के रसूल के

की थी, वे भी इसी काल में पूरी हो गयीं। जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि हिर:(यमन में एक स्थान) नामक स्थान से एक स्त्री अकेली चलेगी तथा '*बैतुल्लाह*' की आकर परिक्रमा करेगी, उसे कोई भय अथवा ख़तरा नहीं होगा। किसरा के कोष तुम्हारे चरणों में ढेर हो जायेंगे। अत: ऐसा ही हुआ। (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब बाबु अलामाति नबुअते फ़िल इस्लाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया :

«إِنَّ اللهَ زَوَى لِيَ الأَرْضَ، فَرَأَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا، وَإِنَّ أُمَّتِي سَيَبْلُغُ مُلْكُهَا مَا زُوِيَ لِي مِنْهَا».

"अल्लाह तआला ने धरती को मेरे लिए संकुचित कर दिया, अन्ततः मैंने उसके पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्र देखे, निकट ही मेरे अनुयायी का प्रभाव-क्षेत्र वहाँ तक पहुँचेगा, जहाँ तक धरती मेरे लिए संकुचित की गयी।"(सहीह मुस्लिम किताबुल फ़ेतन व अशराति स्साअति बाब हलाके हाज़िहिल उम्मते बआज़हुम बिबाअज़िन)

राज्य की यह विशालता भी मुसलमानों के भाग में आयी तथा ईरान, सीरिया, मिस्र, अफ़्रीका तथा अन्य दूरस्थ देश विजित हुये तथा कुफ्र तथा मूर्तिपूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद तथा सुन्नत के दीप प्रकाशित हुए। तथा इस्लामी संस्कृति का झंडा दुनिया के कोने-कोने में फ़हराने लगा। परन्तु यह वादा प्रतिबन्धित था, जब मुसलमान ईमान में क्षीण तथा पुण्य के कार्य करने में आलस्य करने लगे, तो अल्लाह ने उनके सम्मान को अपमान में, उनके विजय को पराजय तथा उनके प्रभुत्व को दासता में तथा उनकी शान्ति तथा स्थिरता को भय तथा आतंक में परिवर्तित कर दिया।

[1]यह भी ईमान तथा पुण्य के कर्म करने के साथ एक अन्य आधार भूत अनुबन्ध है जिसके कारण मुसलमान अल्लाह की सहायता के अधिकारी तथा एकेश्वरवाद के गुण से शून्य होने के पश्चात वह अल्लाह की सहायता से वंचित हो जायेंगे।

[2]इस कुफ्र से तात्पर्य वही ईमान, पुण्य के कर्म तथा एकेश्वरवाद से वंचित होना है, जिसके पश्चात एक मनुष्य अल्लाह की आज्ञाकारिता से निकल जाता तथा कुफ्र एवम् भ्रष्टाचार में प्रवेश कर जाता है।

وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

अनुसरण में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाये ।[1]

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾

(५७) यह विचार आप कदापि न करना कि अवज्ञाकारी लोग धरती पर (इधर-उधर फैल कर) हमें पराजित कर देनें वाले हैं [2] उनका मूल ठिकाना तो नरक है, जो नि:संदेह बहुत बुरा ठिकाना है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُم مِّنَ الظَّهِيرَةِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ ۚ

(५८) हे ईमानवालो ! तुमसे तुम्हारे स्वामित्व के दासों को तथा उन्हें भी जो तुम में से वयस्क अवस्था को न पहुँचें हों (अपने आने के) तीन समयों में आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक है। फ़ज्र की नमाज़ से पूर्व तथा ज़ोहर (मध्यान्ह) के समय जब तुम अपने वस्त्र उतारे रखते हो तथा एशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात[3] ये तीनो समय तुम्हारे (एकान्त) एवं पर्दे के हैं । [4]

---

[1]यह जैसाकि मुसलमानों को बल देकर कहा गया कि अल्लाह की कृपा तथा सहायता प्राप्त करने का साधन यही है जिस पर चलकर सहाबा कराम को यह कृपा तथा सहायता प्राप्त हुई ।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी तथा झूठे लोग अल्लाह को बाध्य नहीं कर सकते, बल्कि अल्लाह तआला उनकी पकड़ करने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है ।

[3]दासों से तात्पर्य दास-दासियाँ दोनों हैं । ثلاث مرات का अर्थ तीन समय हैं । यह तीन समय ऐसे हैं कि मनुष्य अपनी पत्नी के साथ घर में विशेष रूप से रहता अथवा ऐसे वस्त्र में हो सकता है कि जिसमें किसी अन्य का देखना उचित नहीं । इसलिए इन तीन समयों में घर के सेवकों को इस बात की आज्ञा नहीं है कि वह बिना आज्ञा प्राप्त किये घर में प्रवेश करें ।

[4] عورات वहुवचन है عورة का, जिसका वास्तविक अर्थ विघ्न तथा दोष के हैं । फिर इसका प्रयोग ऐसी वस्तु पर किया जाने लगा जिसका प्रदर्शित करना तथा देखना प्रिय न हो । स्त्री को भी इसी लिए औरत कहा जाता है कि उसका प्रदर्शन तथा नग्न होना तथा देखना धार्मिक नियमानुसार अप्रिय है । यहाँ वर्णित तीन समयों को औरात कहा गया है

لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

इन समयों के अतिरिक्त न तो तुम पर कोई पाप है न उन पर।[1] तुम सब आपस में अधिकतर एक-दूसरे के पास आने-जाने वाले हो (ही,)[2] अल्लाह इस प्रकार खोल-खोलकर अपने आदेश तुम से वर्णन कर रहा है। और अल्लाह (तआला) ज्ञानी तथा गुणज्ञ है।

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوْا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

(५९) तथा तुम में से जो बच्चे वयस्क अवस्था को पहुँच जायें तो जिस प्रकार उनसे पूर्व के (बड़े) लोग आज्ञा माँगते हैं, उन्हें भी आज्ञा माँग कर आना चाहिए।[3] अल्लाह (तआला) तुमसे इसी प्रकार अपनी आयतों का वर्णन करता है। अल्लाह (तआला) ही ज्ञानी तथा मर्मज्ञ है।

अर्थात ये तुम्हारे पर्दे तथा एकान्त के समय हैं, जिनमें तुम अपने विशेष वस्त्रों तथा शारीरिक प्रदर्शन को प्रिय नहीं समझते हो।

[1]अर्थात इन वर्णित तीन समयों के अतिरिक्त घर के सेवकों को आज्ञा है कि वह आज्ञा प्राप्त किये बिना घर के अन्दर आ-जा सकते हैं।

[2]यह वही कारण है जो हदीस में बिल्ली के पवित्र होने की बताई गई है। «إِنَّهَا لَيْسَتْ بِنَجَسٍ؛ إِنَّهَا مِنَ الطَّوَّافِينَ عَلَيْكُمْ - أَوِ الطَّوَّافَاتِ -». "बिल्ली अपवित्र नहीं है इसलिए कि वह अधिकतर तुम्हारे निकट (घर के अन्दर) आने जाने वाली है।"(अबू दाऊद किताबुत तहारत बाब सूरूल हिर्र: तिर्मिज़ी किताब व बाँब मज़्कूर वग़ैरह) सेवक तथा स्वामी को भी हर समय मिलने की आवश्यकता रहती है, इसी सामान्य आवश्यकता के कारण अल्लाह तआला ने यह आज्ञा प्रदान की, क्योंकि वह सभी बातें जानने वाला है, लोगों की आवश्यकताओं एवं कष्टों को जानता है तथा गुणज्ञ है, उसके प्रत्येक आदेश में भक्तों के लिए लाभ तथा हित हैं।

[3]इन बालकों से तात्पर्य स्वतन्त्र बालक हैं, वयस्कता के पश्चात आज्ञा लेनें में वह साधारण पुरूषों जैसा है, इसलिए उनके लिए आवश्यक है कि जब भी किसी के घर में प्रवेश करें तो प्रथम आज्ञा प्राप्त करें।

(६०) तथा बड़ी बूढ़ी स्त्रियाँ जिन्हें विवाह की आशा (तथा इच्छा) ही न रही हो वह यदि अपने वस्त्र (पर्दे के लिए प्रयोग किये गये) उतार रखें तो उन पर कोई दोष नहीं, यदि वह अपनी शोभा दिखाने वाली न हों ।[1] परन्तु उन से भी बची रहें तो उनके लिए अति श्रेष्ठ है ।[2] और अल्लाह (तआला) सुनता तथा जानता है ।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ بِزِيْنَةٍ ۭ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

(६१) अंधे पर, लंगड़े पर, रोगी पर तथा स्वयं तुम पर कदापि कोई विघ्न नहीं कि तुम अपने घरों से खालो अथवा अपने पिताओं के घरों से अथवा अपनी माताओं के घरों से, अथवा अपने भाईयों के घरों से, अथवा अपनी बहनों के घरों से, अथवा अपने चाचाओं के घरों से,[3] अथवा अपनी बुआओं के घरों से,

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَاۗىِٕكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ

---

[1]इनसे तात्पर्य बूढ़ी स्त्रियाँ तथा बाँझ स्त्रियाँ हैं जिनका मासिक धर्म आना बन्द हो गया हो तथा सन्तानोत्पत्ति के योग्य न रह गयी हों । इस आयु में साधारणत: स्त्री के अन्दर पुरूष की ओर कामभावना की प्राकृतिक इच्छा समाप्त हो चुकी होती है, न वह किसी पुरूष से विवाह की इच्छा रखती है तथा न ही कोई पुरूष इस भावना से उनकी ओर आकर्षित होता है । ऐसी स्त्रियों को पर्दे में कमी के लिए आज्ञा दे दी गयी है "वस्त्र उतारे दें" से वह वस्त्र अभिप्राय है जो शलवार कमीज़ के ऊपर स्त्री पर्दे के लिए बड़ी चादर अथवा नक़ाब आदि के रूप में प्रयोग करती हैं, यदि उनका उद्देश्य अपना सौन्दर्य प्रसाधन तथा आभूषणों का प्रदर्शन न हो । इसका अर्थ यह है कि कोई भी स्त्री अपनी कामभावना के समाप्त हो जाने के उपरान्त यदि बनाओ सिंगार के द्वारा अपनी कामवासना प्रदर्शित करने की रोगी हो, तो वह इस पर्दे की कमी के आदेश से वंचित है तथा उसके लिए पूर्ण पर्दा करना आवश्यक है ।

[2]अर्थात वर्णित बूढ़ी स्त्रियाँ भी पर्दे में कमी न करें, बल्कि नियमित रूप से बड़ी चादर अथवा नक़ाब भी प्रयोग करती रहें, तो यह उनके लिए श्रेष्ठ है ।

[3]इसका एक अर्थ यह वर्णित किया गया है कि धर्मयुद्ध में जाते समय सहाबा कराम आयत में वर्णित लाचारों को अपने घरों की चाबियाँ दे जाते थे तथा उन्हें घर की

اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا

अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा उन घरों से जिन की चाबियों के स्वामी तुम हो अथवा अपने मित्रों[1] के घरों से। तुम पर इसमें भी कोई पाप नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ अथवा अलग-अलग।[2] पर जब तुम

सामग्री खाने-पीने की आज्ञा देकर जाते थे। परन्तु यह लाचार सहाबा इसके उपरान्त स्वामियों की अनुपस्थिति में, वहाँ से खाना-पीना उचित नहीं समझते थे, अल्लाह ने फ़रमाया कि उपरोक्त लोगों के लिए अपने सगे सम्बन्धियों के घरों से अथवा जिन घरों की चाबियाँ उनके पास हैं, उनसे खाने-पीने में कोई बाधा (पाप) नहीं है। तथा कुछ ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि स्वस्थ सहाबा लाचार सहाबा के साथ इसलिए खाना प्रिय नहीं समझते थे कि वे लाचारी के कारण कम खायेंगे तथा ये अधिक खा लेंगे, इसलिए खाने में उनके साथ अत्याचार न हो जाये। इसी प्रकार स्वयं लाचार सहाबा भी स्वस्थ सहाबा के साथ भोजन करना प्रिय नहीं समझते थे कि लोग उनके साथ भोजन करने में घृणा का आभास न करें। अल्लाह तआला ने दोनों के लिए स्पष्टीकरण कर दिया कि इसमें कोई पाप वाली बात नहीं है।

[1]जैसाकि कुछ आलिमों ने (धर्मज्ञों) ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि इससे वह सामान्य प्रकार का भोजन तात्पर्य है जिनके खाने से किसी को बोझ का आभास नहीं होता। परन्तु ऐसी स्वादिष्ट वस्तुऐं जो स्वामियों ने विशेष रूप से अलग छिपाकर रखी हो, ताकि उसपर किसी की दृष्टि न पड़े, इसी प्रकार भण्डार की हुई वस्तुयें, इनका खाना तथा इनका प्रयोग में लाना उचित नहीं। (ऐसरूत्तफ़ासीर) इसी प्रकार यहाँ पुत्रों के घरों का वर्णन नहीं किया गया, इसका कारण यह है कि पुत्रों के घर उस व्यक्ति के अपने ही घर हैं, जिस प्रकार हदीस में है «أَنْتَ وَمَالُكَ لأَبِيكَ». (इब्ने माजा संख्या २२९१, मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ १७९, २०४ तथा २१४) "तू तथा तेरा धन तेरे पिता का है।" अन्य हदीस में है। ولد الرجل من كسبه (इब्ने माजा संख्या २१३७, अबू दाऊद संख्या ३५२८ तथा अलबानी ने इसे सही कहा है) "मनुष्य की सन्तान, उसकी कमाई में से है।"

[2]इसमें एक अन्य संकीर्णता का निवारण किया गया है। कुछ लोग अकेले भोजन करना प्रिय नहीं समझते थे तथा किसी को साथ बिठाकर भोजन करना आवश्यक समझते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, एकत्रित होकर खा लो अथवा अलग-अलग दोनों प्रकार से मान्य है, पाप किसी में नहीं। परन्तु एकत्रित होकर खाना अधिक शुभ का कारण है, जैसाकि कुछ हदीसों से विदित होता है। (इब्ने कसीर)

جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ۚ فَإِذَا دَخَلْتُم بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦١﴾

घरों में जाने लगो तो अपने घर वालों को सलाम कर लिया करो,[1] शुभकामना है जो मंगलमय तथा पवित्र अल्लाह की ओर से अवतरित है, इसी प्रकार अल्लाह (तआला) खोल-खोल कर अपने आदेशों का वर्णन कर रहा है ताकि तुम समझ लो।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

(६२) ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह (तआला) पर तथा उसके रसूल पर विश्वास करते हैं तथा जब ऐसी समस्या में जिसमें लोगों के एकत्रित होने की आवश्यकता होती है नबी के साथ होते हैं, तो जब तक आपसे आज्ञा न प्राप्त कर लें कहीं नहीं जाते। जो लोग (ऐसे अवसर पर) आप से आज्ञा ले लेते हैं, वास्तव में वह यही हैं जो अल्लाह (तआला) पर तथा उसके रसूल पर ईमान ला चुके हैं।[2] तो ऐसे लोग जब आप से अपने किसी कार्य के लिए आज्ञा माँगें, तो आप उनमें से जिसे चाहें आज्ञा दें तथा उनके लिए अल्लाह से मोक्ष की

---

[1]इसमें अपने घरों में प्रवेश करने के शिष्टाचार का वर्णन है तथा वह यह है कि प्रवेश करते समय घर वालों को सलाम (अभिवादन) करो, मनुष्य के लिए अपनी पत्नी तथा सन्तान को सलाम करने में सामान्यतया कठिनाई प्रतीत होती है। परन्तु ईमान वालों के लिए आवश्यक है कि वे अल्लाह के आदेश के अनुसार ऐसा करें। अपनी पत्नी तथा सन्तान को सुरक्षा की दुआ से क्यों वंचित रखा जाये।

[2]अर्थात शुक्रवार अथवा ईदों (ईदुल फित्र तथा ईदुल अज़हा) के सम्मेलन में अथवा आन्तरिक तथा बाह्य समस्या पर विचार करने के लिए बुलायी गयी सभा में ईमानवाले तो उपस्थिति होते हैं, इसी प्रकार यदि वे सम्मिलित होने योग्य नहीं होते हैं तो आज्ञा प्राप्त करते हैं। जिसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह हुआ कि द्वयवादी ऐसे सम्मेलन में सम्मिलित होने से तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अनुमति लेने से बचते हैं।

प्रार्थना करें, नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला कृपालु है।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

(६३) तुम (अल्लाह के) नबी के बुलावे को ऐसा साधारण बुलावा न समझो जैसा आपस में एक का दूसरे को होता है।[1] तुम में से उन्हें अल्लाह भली-भाँति जानता है जो आँख बचा कर चुपके से निकल जाते हैं।[2] (सुनो,) जो लोग रसूल के आदेश का विरोध करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई अत्यन्त घोर दुर्घटना न आ पड़े[3] अथवा उन्हें कोई दुख की मार न पड़े।

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि जिस प्रकार तुम एक-दूसरे को नाम लेकर पुकारते हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस प्रकार मत पुकारो। जैसे हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नहीं बल्कि हे रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हे नबी अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आदि कहो (यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल के लिए था, जब सहाबा कराम को आवश्यकता होती थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ध्यान आकर्षित करें)। अन्य अर्थ यह हैं कि रसूल के शाप को अन्यों की शाप की भाँति न समझो, इसलिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ स्वीकार होती है। इसलिए नबी का शाप न लो, तुम नाश हो जाओगे।

[2]यह द्वयवादियों का व्यवहार होता था कि विचार समिति से चुपके से खिसक जाते थे।

[3]इस आपदा से तात्पर्य दिलों का वह टेढ़ापन है, जो मनुष्य को ईमान से वंचित करता है। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों की अवहेलना तथा उनके विरोध का परिणाम है। तथा ईमान से वंचित होकर कुफ्र पर अंत, नरक की स्थाई यातना का कारण बनता है, जैसाकि आयत के अगले वाक्य में फ़रमाया। अत: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण तथा सुन्नत (चरित्र) को हर समय सामने रखना चाहिए। इसलिए जो कथनी तथा करनी उसके अनुसार होगी वही अल्लाह के दरबार में स्वीकार तथा शेष सभी अस्वीकार होंगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैं «مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا، فَهُوَ رَدٌّ» "जिसने ऐसा कार्य किया जो हमारे आदेश अनुरूप नहीं है, वह बेकार है।" (अल-बुख़ारी किताबुस्सुलह बाँब इज़ा स्तलहू अला सुलहे जौरिन तथा मुस्लिम किताबुल अक़ज़िया बाब नक़ज़िल अहकामिल बातिल: व रद्दि मुहदसातिल उमूर वस्सुनन)

أَلَآ إِنَّ لِلَّهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنتُمْ عَلَيْهِ ۖ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

(६४) सतर्क हो जाओ कि आकाश तथा धरती पर जो कुछ है सब अल्लाह (तआला) का ही है,[1] जिस मार्ग पर तुम लोग हो वह उसे भली-भाँति जानता है[2] तथा जिस दिन यह सब उसी की ओर लौटाये जायेंगे, उस दिन उनको उनके किये हुए से वह अवगत करा देगा। तथा अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

सूरतुल फ़ुरक़ान-२५

سُورَةُ الْفُرْقَانِ

सूर: फ़ुरक़ान मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें सतहत्तर आयतें तथा छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

تَبَارَكَ الَّذِى نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى

(१) अत्यन्त शुभ है वह (अल्लाह तआला) जिस ने अपने भक्त पर फ़ुरक़ान[3] अवतरित

---

[1]उत्पत्ति के आधार पर भी, स्वामित्व के आधार पर भी, तथा अधीनता के आधार पर भी। वह जिस प्रकार चाहे प्रयोग में लाये तथा जिस वस्तु को चाहे आदेश दे। अत: उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मामले में अल्लाह से डरते रहना चाहिए, जिसकी माँग यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी भी आदेश की अवहेलना नहीं करनी चाहिए तथा जिससे उसने रोक दिया है, उसे नहीं करना चाहिए। इसलिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण किये जाने का उद्देश्य ही यह है कि उसका आज्ञापालन किया जाये।

[2]यह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधियों को चेतावनी है कि जो कुछ तुम कर रहे हो, यह न समझो कि वह अल्लाह से छिपा रह सकता है। उसके ज्ञान में सभी कुछ है तथा वह उसके अनुसार क़ियामत के दिन प्रतिफल तथा दण्ड देगा।

[3]फ़ुरक़ान का अर्थ है सत्य तथा असत्य, एकेश्वरवाद-अनेकेश्वरवाद एवं न्याय-अन्याय के मध्य अन्तर करने वाला, इस क़ुरआन ने खोलकर इन बातों को स्पष्ट कर दिया है, इसलिए इसे *फ़ुरक़ान* कहा गया है।

عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ﴿۱﴾

किया ताकि वह सभी लोगों के लिए[1] सतर्क करने वाला बन जाये।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ

(२) उसी अल्लाह का अधिपत्य है आकाशों तथा धरती पर,[2] तथा वह कोई सन्तान नहीं रखता,[3] न उसके राज्य में उसका कोई साझीदार है,[4] तथा प्रत्येक वस्तु को उसने पैदा करके एक

---

[1]इससे भी विदित हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत विश्वव्यापी है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी मानव तथा दानव के लिए पथप्रदर्शक तथा मार्गदर्शन बनाकर भेजे गये जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا﴾

"आप कह दें कि ऐ लोगो, मैं तुम सभी की ओर अल्लाह का संदेशवाहक हूँ।" *(सूर: अल-आराफ़-१५८)*

और एक हदीस में भी फ़रमाया :

بُعثت إلى الأحمر و الأسود

"मुझे लालवर्ण तथा काले वर्ण सभी की ओर नबी बनाकर भेजा गया।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद)

«كَانَ النَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَىٰ قَوْمِهِ خَاصَّةً، وَبُعِثْتُ إِلَى النَّاسِ عَامَّةً».

"पूर्व में नबी किसी एक समुदाय की ओर भेजे जाते थे तथा मैं सभी लोगों की ओर नबी बनाकर भेजा गया हूँ।" (सहीह बुख़ारी किताबुत तयम्मुम तथा मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

रिसालत तथा नबूअत के पश्चात, एकेश्वरवाद का वर्णन किया जा रहा है। यहाँ अल्लाह के चार गुणों का वर्णन है।

[2]यह पहला गुण है अर्थात सृष्टि में अधिकृत मात्र वही है, कोई अन्य नहीं।

[3]इसमें इसाई, यहूदी तथा कुछ उन अरब जातियों का खण्डन है जो फ़रिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे।

[4]इसमें मूर्तिपूजक, मिश्रणवादियों तथा दो देवताओं (भलाई-बुराई, अंधकार तथा प्रकाश के स्रष्टा) में विश्वास रखनेवालों का खण्डन है।

فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝٢

निर्धारित रूप दे दिया है।[1]

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣

(३) तथा उन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त जिन्हें अपने देवता (पूज्य) बना रखे हैं, वे किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे स्वयं (किसी के द्वारा) रचित किये जाते हैं, यह स्वयं अपने लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखते तथा न जीवन-मृत्यु का। तथा न पुन: जी उठने के वे अधिकारी हैं।[2]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝٤

(४) तथा काफ़िरों ने कहा यह तो मात्र उसका स्वयं बनाया झूठ है, जिस पर अन्य लोगों ने भी उसकी सहायता की है,[3] वास्तव में यह काफ़िर बड़े ही अत्याचार तथा निरे झूठ के कर्ता हुए हैं।

---

[1]प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल वही है तथा अपनी नीति तथा इच्छानुसार उसने अपनी सृष्टि को प्रत्येक वह वस्तु भी सुलभ की है, जो उसके लिए उचित है अथवा प्रत्येक वस्तु की मृत्यु तथा जीविका उसने प्रारम्भ से ही निर्धारित कर दी है।

[2]परन्तु अत्याचारियों ने ऐसे गुणों से सुशोभित प्रभु को छोड़ कर ऐसे लोगों को पूज्य वना लिया है, जो अपने विषय में भी किसी भलाई की शक्ति नहीं रखते, कहाँ यह कि दूसरों के लिए कुछ कर सकने की शक्ति रखते हों। इसके पश्चात नबूअत को अस्वीकार करने वालों के संदेह का खण्डन किया जा रहा है।

[3]मूर्तिपूजक कहते थे कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह किताब गढ़ने में यहूदियों अथवा उनके कुछ स्वतन्त्र किये हुए दास (जैसे अबू फकिहा यसार, अदांस तथा जबर आदि) से सहायता ली है। जैसाकि *सूर: अन-नहल-१०३* में इसका आवश्यक विवरण गुज़र चुका है। यहाँ क़ुरआन ने इस आरोप को अत्याचार तथा झूठा बताया है। भला एक अनपढ़ व्यक्ति दूसरों की सहायता से ऐसी किताब प्रस्तुत कर सकता है जो स्वच्छता तथा भाषा शैली एवं चमत्कारी वाक्य रचना में अनुपम हो। वास्तविकता तथा आत्मज्ञान के वर्णन में भी अद्वितीय, मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक आदेश एवं नियम के विस्तृत वर्णन में भी निरूत्तर हो तथा भूत की सूचनाएं तथा भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पता देने तथा वर्णन करने में भी उसकी सत्यता निर्विवाद हो।

وَقَالُوٓا اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ اكۡتَتَبَهَا فَهِيَ تُمۡلٰى عَلَيۡهِ بُكۡرَةً وَّاَصِيۡلًا ۝٥

(५) तथा यह भी कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जो उसने लिख रखी हैं, बस वही प्रातः संध्या उसके समक्ष पढ़ी जाती हैं।

قُلۡ اَنۡزَلَهُ الَّذِىۡ يَعۡلَمُ السِّرَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ۝٦

(६) कह दीजिए कि इसे तो उस अल्लाह ने अवतरित किया है जो आकाश तथा धरती की सभी गुप्त बातों को जानता है।[1] निःसंदेह वह अत्यन्त क्षमाशील तथा दयालु है।[2]

وَقَالُوۡا مَالِ هٰذَا الرَّسُوۡلِ يَاۡكُلُ الطَّعَامَ وَيَمۡشِىۡ فِى الۡاَسۡوَاقِ ؕ لَوۡلَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡهِ مَلَكٌ فَيَكُوۡنَ مَعَهٗ نَذِيۡرًا ۝٧

(७) तथा उन्होंने कहा कि यह कैसा रसूल है कि भोजन करता है, तथा बाज़ारों में चलता फिरता है[3] उसके पास, कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जाता कि वह भी उसके साथ होकर डराने वाला बन जाता ?[4]

---

[1]यह उनके झूठ तथा आक्षेप के उत्तर में कहा कि क़ुरआन को तो देखो, इसमें क्या है ? क्या इसमें त्रुटि की असत्य बात है ? निःसंदेह नहीं है। अपितु प्रत्येक बात सही तथा सत्य है, इसलिए कि इसको उतारने वाला वह है जो धरती तथा आकाश की प्रत्येक गुप्त बात को जानता है।

[2]इसलिए वह क्षमा तथा अनदेखी से काम लेता है। वरन् उनका क़ुरआन बनाने का आरोप अत्यन्त गंभीर है, जिसके कारण तुरन्त ही अल्लाह के प्रकोप की पकड़ में आ सकते हैं।

[3]क़ुरआन पर आरोप के पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आरोप लगाया जा रहा है तथा यह आरोप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानव प्रकृति पर है। क्योंकि उनके विचार से मानव प्रकृति रिसालत की महानता के योग्य नहीं। इसलिए उन्होंने कहा कि यह तो खाता-पीता तथा बाज़ारों में आता-जाता है तथा हमारे जैसे ही मानव है, जबकि रसूल को मनुष्य नहीं होना चाहिए।

[4]उपरोक्त वर्णित आपत्ति से नीचे उतर कर कहा जा रहा है कि चलो कुछ और नहीं तो एक फ़रिश्ता ही उसके साथ हो जो उसका सहायक तथा पुष्टि करने वाला हो।

(८) अथवा उसके पास कोई कोष ही डाल दिया जाता[1] अथवा उसका कोई बाग़ ही होता जिसमें से यह खाता।[2] तथा उन अत्याचारियों ने कहा कि तुम तो ऐसे मनुष्य के पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है।[3]

أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ⑧

(९) तनिक सोचिए तो ! ये लोग आपसे सम्बन्धित कैसी-कैसी बाते करते हैं, कि जिससे स्वयं ही विचलित हो रहे हैं तथा किसी प्रकार से भी मार्ग पर नहीं आ सकते।[4]

انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ⑨

(१०) अल्लाह (तआला) तो ऐसा शुभकारी है कि चाहे तो आपको बहुत से ऐसे बाग़ प्रदान कर दे, जो उनके कहे हुए बाग़ों से अति उत्तम हों, जिनके नीचे नदियाँ लहरें मार रही हों तथा आपको बहुत से पक्के महल भी प्रदान कर दे।[5]

تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل لَّكَ قُصُورًا ⑩

---

[1]ताकि जीवन साधन की आवश्यकताओं से निश्चिन्त होता।

[2]ताकि उसका महत्व हमसे कुछ श्रेष्ठ हो जाता।

[3]अर्थात जिसकी बुद्धि तथा समझ जादू से प्रभावित तथा विकृत है।

[4]अर्थात हे पैग़म्बर ! आप के सम्बन्ध में यह इस प्रकार की बातें तथा आक्षेप आरोपित करते हैं, कभी जादूगर कहते हैं, कभी जादू से पीड़ित तथा पागल तथा कभी झूठा एवं कवि कहते हैं। परन्तु ये सारी बातें असत्य हैं तथा जिनके पास तनिक भी बुद्धि एवं समझ है, वह इनका झूठा होना जानते हैं। अत: यह ऐसी बातें करके स्वयं ही मार्गदर्शन के पथ से दूर हो जाते हैं, उन्हें मार्गदर्शन किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

[5]अर्थात यह आप के लिए जो माँग करते हैं, अल्लाह का उनको कर देना कोई कठिन नहीं है, वह चाहे तो उनसे उत्तम बाग़ तथा भवन दुनिया में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान कर सकता है जो उनके विचार में हैं। परन्तु उनकी माँगें तो झुठलाने तथा द्वेष के कारण हैं न कि मार्गदर्शन को प्राप्त करने के लिए तथा मोक्ष की खोज के लिए।

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ⑪

(११) बात यह है कि लोग क़ियामत को झूठ समझते हैं।[1] तथा क़ियामत को झुठलाने वालों के लिए हमने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ⑫

(१२) जब वह इन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका क्रोध से विफरना तथा चिंघाड़ना सुनेंगे।[2]

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ⑬

(१३) तथा जब यह नरक के किसी संकुचित स्थान में बाँध कर फेंक दिये जायेंगे, तो वहाँ अपने लिए मृत्यु ही मृत्यु पुकारेंगे।

لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ⑭

(१४) (उनसे कहा जायेगा) आज एक ही मृत्यु को न पुकारो अपितु बहुत-सी मृत्युओं को पुकारो।[3]

---

[1]क़ियामत का यह झुठलाना ही रिसालत को झुठलाने का कारण है।

[2]अर्थात नरक उन काफ़िरों को दूर से ही हश्र के मैदान में देखकर क्रोध से खौल उठेगा तथा उनको अपनी भयानक यातना से पीड़ित करने के लिए चिल्लायेगा तथा झुंझलायेगा, जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۞ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ﴾

"जब नरक में जाने वाले नरक में डाले जायेंगे तो उसका गर्जन सुनेंगे तथा वह (क्रोधवश) उछलता होगा, ऐसा लगेगा कि वह क्रोध से फट पड़ेगा।" (सूर: *अल-मुल्क-७,८*)

नरक का देखना तथा चिल्लाना एक वास्तविकता है, कल्पना नहीं। अल्लाह के लिए उसके अन्दर आभास तथा बोध की शक्ति उत्पन्न कर देना कठिन नहीं है, वह जो चाहे कर सकता है। बोलने की शक्ति भी तो अल्लाह तआला उसे प्रदान करेगा तथा वह ﴿ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴾ की आवाज़ उठायेगा। (*सूर: क़ाफ़-३०*)

[3]अर्थात नरकवासी जब नरक की यातना से घबरा कर कामना करेंगें कि उन्हें मृत्यु आ जाये, वे विनाश के घाट उतर जायें। तो उनसे कहा जायेगा कि अब एक मृत्यु को नहीं कई मृत्युओं को पुकारो। अर्थ यह है कि अब तुम्हारे भाग्य में विभिन्न प्रकार की यातनायें हैं। अर्थात मृत्यु ही मृत्यु है, तुम कहाँ तक मृत्यु की माँग करोगे।

(१५) आप कह दीजिए क्या यह अच्छा है[1] अथवा वह स्थाई स्वर्ग जिसका वचन परहेज़गारों (सदाचारियों) को दिया गया है, जो उनका प्रतिफल है तथा उनके लौटने का मूल स्थान है।

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ⑮

(१६) वे जो चाहेंगे उनके लिए वहाँ उपस्थिति होगा, सदावासी। यह तो आपके प्रभु का वचन है जिसकी माँग की जानी चाहिए।[2]

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ⑯

(१७) तथा जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें तथा अल्लाह के सिवाय जिन्हें ये पूजते रहे उन्हें एकत्रित करके पूछेगा क्या मेरे इन भक्तों को तुमने भटकाया अथवा यह स्वयं भटक गये।[3]

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ⑰

---

[1]"यह" संकेत है नरक की वर्णित यातनाओं की ओर, जिनमें नरकवासी जकड़े हुए होंगे कि यह अच्छा है जो कुफ़्र तथा मूर्तिपूजा का प्रतिकार है अथवा वह स्वर्ग, जिसका वचन अल्लाह से भय खाने वालों को उनके अल्लाह से भय तथा अल्लाह के आदेशों का पालन करने पर दिया गया है। यह प्रश्न नरक में किया जायेगा, परन्तु उसे यहाँ इसलिए वर्णित किया गया है कि शायद नरकवासियों के इस परिणाम से शिक्षा प्राप्त करके लोग अल्लाह का भय तथा उसके आदेशों के पालन का मार्ग अपना लें तथा इस दुष्परिणाम से बच जायें जिसका चित्रण यहाँ किया गया है।

[2]अर्थात ऐसा वादा जो अवश्य पूरा होकर रहेगा। जैसे ऋण की माँग की जाती है उसी प्रकार अल्लाह ने अपने ऊपर यह वादा निश्चित कर लिया है जिसकी ईमान वाले उससे माँग कर सकते हैं। यह केवल उसकी दया तथा कृपा है कि उसने ईमानवालों के लिए इस उत्तम बदले को अपने लिए निश्चित कर लिया है।

[3]दुनिया में अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी पूजा की जाती रही है तथा की जाती रहेगी, उनमें खनिज पदार्थ (पत्थर, लकड़ी तथा अन्य धातुओं की मूर्तियाँ) भी हैं, जो निर्जीव हैं तथा अल्लाह के पुण्यकारी भक्त भी हैं जो सजीव हैं। जैसे आदरणीय उज़ैर तथा आदरणीय मसीह तथा अन्य महात्मा। इसी प्रकार फ़रिश्तों तथा जिन्नातों के पुजारी भी होंगे। अल्लाह तआला निर्जीव पदार्थों को भी बुद्धि तथा समझ एवं बोलने की शक्ति

(१८) वे उत्तर देंगे तू पवित्र है स्वयं हमें यह शोभनीय नही था कि तेरे अतिरिक्त अन्यों को अपना कार्यक्षम बनाते,[1] वास्तविकता यह है कि तूने इन्हें तथा इनके पूर्वजों को सम्पन्नता प्रदान की, यहाँ तक कि यह शिक्षायें भुला बैठे, यह लोग थे ही विनाश के योग्य।[2]

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾

(१९) तो उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी सारी बातों में झुठलाया। अब न तो तुम में अपनी यातना को फेरने की शक्ति है, न सहायता करने की,[3] तुममें से जिस-जिसने अत्याचार किया है[4] हम उसे घोर यातना का स्वाद चखायेंगे।

فَقَدْ كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا وَمَنْ يَظْلِمْ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾

प्रदान करेगा। तथा उन सभी देवताओं से पूछेगा कि बताओ मेरे भक्तों को तुमने अपनी पूजा का आदेश दिया था अथवा ये अपनी इच्छा से तुम्हारी पूजा करके भटके थे ?

[1]अर्थात जब हम स्वयं तेरे अतिरिक्त किसी को कार्यक्षम नहीं समझते थे, तो फिर हम अपने विषय में किस प्रकार लोगों को कह सकते थे कि तुम अल्लाह के सिवाय हमें अपना रक्षक एवं कार्यक्षम समझो।

[2]यह शिर्क का कारण है कि सांसारिक धन तथा साधन की बहुतायत ने उन्हें तेरी याद से निश्चिन्त कर दिया तथा विनाश उनका दुर्भाग्य बन गया।

[3]यह अल्लाह तआला का कथन है जो मूर्तिपूजकों को सम्बोधित करके अल्लाह तआला कहेगा कि तुम जिनको अपना देवता समझते थे, उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा कह दिया है तथा तुमने देख लिया कि उन्होंने तुमसे अलग होने की घोषणा कर दी है। अर्थात जिनको तुम अपना समझते थे, वे सहायक सिद्ध नहीं हुए। अब क्या तुम्हारे अन्दर यह शक्ति है कि तुम मेरी यातना को अपने ऊपर से टाल सको तथा अपनी सहायता कर सको ?

[4]अत्याचार से तात्पर्य वही शिर्क (मिश्रणवाद) है, जैसाकि पूर्व कथन से स्पष्ट है। तथा क़ुरआन में अन्य स्थान पर शिर्क (अल्लाह से अन्य की पूजा को) महा अत्याचार कहा गया है। ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (वास्तव में शिर्क घोर अत्याचार है)। (सूर: *लुक़मान*-१३)

وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّآ إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۗ أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

(२०) तथा हमने आपसे पूर्व जितने भी रसूल भेजे सब के सब भोजन भी करते थे[1] तथा बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे।[2] तथा हम ने तुममें से प्रत्येक को अन्य की परीक्षा का साधन बना दिया।[3] क्या तुम धैर्य रखोगे ? तथा तेरा प्रभु सब कुछ देखने वाला है।[4]

---

[1]अर्थात वह मनुष्य थे तथा भोजन के स्पृही (अभिलाषी)।

[2]अर्थात मान्य जीविका उपार्जन के लिए श्रम तथा व्यापार भी करते थे। अर्थ इससे यह है कि यह बातें नबूअत की गरिमा के अनुरूप हैं, विपरीत नहीं, जिस प्रकार कुछ लोग समझते हैं।

[3]अर्थात हमने उन नबियों की तथा उनके द्वारा उन पर ईमान लाने वालों की परीक्षा ली, ताकि खरे-खोटे में भेद स्पष्ट हो जाये, जिन्होंने परीक्षा में धैर्य धारण किया वे सफल तथा अन्य असफल रहे। इसीलिए आगे फ़रमाया : "क्या तुम धैर्य रखोगे ?"

[4]अर्थात वह जानता है कि प्रकाशना (वहयी) तथा रिसालत के योग्य कौन है तथा कौन नहीं ﴿اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ﴾ हदीस में भी आता है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे अधिकार दिया कि राजा नबी बनूँ अथवा दास रसूल ? मैंने दास रसूल बनना स्वीकार किया। (इब्ने कसीर)